THE BOOK WAS DRENCHED

बंदी

[रूस के प्रख्यात उपन्यासकार यूजेन चिरकोव का मर्मस्पर्शी उपन्यास]

अनुवादक

कृष्णवल्लभ द्विवेदी, बी० ए०

प्रकाशक

आदर्श-ग्रंथमाला

दारागंज, प्रयाग

प्रथम-संस्करण } १९३२ { मूल्य ।॥)

प्रकाशक
जगपति चतुर्वेदी, हिन्दी-भूषण, विशारद
आदर्श-ग्रंथमाला,
दारागंज, प्रयाग

मुद्रक
विजयबहादुर सिंह, बी० ए०
महाशक्ति-प्रेस,
बुलानाला, बनारस सिटी

परिचय

विश्व-साहित्य में युगान्तर पैदा कर देने वाले रूसी उपन्यासों का परिचय देने की आवश्यकता नहीं। मानव-जीवन के आन्तरिक मनोभावों का रहस्योद्घाटन एवं सूक्ष्म विश्लेषण करने की अमर कला में रूसी साहित्य अपना शानी नहीं रखता। बंदी उसी अप्रतिम साहित्य-भंडार का एक जाज्वल्यमान रत्न है।

इस पुस्तक में प्रतिभाशाली लेखक ने युवक-हृदय के अंतराल में धधकती हुई विद्रोहाग्नि की विध्वंसकारिणी स्फुलिंग-लपकों का जीता-जागता चित्र खींचा है, उसे देखकर आपका दिल फड़क उठेगा। मिलन-सुख की मधुर कल्पना तथा आकुल उत्कंठा के साथ-साथ वियोग-जनित संताप के मूक-अश्रु-प्रवाह पर दृष्टिपात कर, एवं नैराश्य-जनित करुण-क्रन्दन की हृदय-विदारक रागिनी सुनकर आपकी आँखों से अविरल अश्रु-धारा बह चलेगी। ऐसा कोई भी सहृदय पाठक न होगा, जिसका दिल इस मर्मस्पर्शी रचना को पढ़कर न पसीज उठे।

अनुवादक

बंदी

१

नित्य की तरह घंटी बज उठती। सिगनल झुक पड़ता और भक-भक करती हुई गाड़ी लकड़ी के प्लेटफार्म पर आ खड़ी होती। बुढ़िया चौंककर डिब्बों की ओर लपकती। वह प्रत्येक खिड़की में उत्कंठा के साथ झाँकती थी। प्रत्येक मुसाफिर की ओर गौर से देखती थी। किंतु उसका लड़का नजर न आता था। देखते-ही-देखते वह सारी गाड़ी छान डालती थी। किंतु सब प्रयत्न निरर्थक हो जाता!

कुछ ही मिनिट बाद पूर्ववत् सन्नाटा छा जाता। न वह ट्रेन ही रहती, न मुसाफिरों की चहल-पहल। सब लोग तितर-बितर हो जाते। प्लेटफार्म खाली हो जाता। रह जाती सिर्फ वह निराश बुढ़िया और उसकी ठंडी आहें।

इसी तरह नित्य सायंकाल के समय वह स्टेशन पर आती थी। ओह! आज कितने दिन बीत गये, जब से मेरिया अपने पुत्र को

प्रतीक्षा कर रही है ! नित्य ही रेल की घंटी बजती है। सीटी की तीखी आवाज आती है। फिर वही घरघराहट, भगदड़, चहल-पहल ! किंतु निकोलस का कुछ भी पता नहीं !

हे भगवन ! इस देरी का क्या कारण है ? मेरिया सोचने लगती, वह कुशल से तो है !! बुढ़िया निराश होकर प्लेटफार्म पर टहला करती। उसकी आँखों में आँसू भर आते और गालों पर टपकने भी लगते थे।

एक दिन स्थानीय पुलिस का दारोगा उतरा। स्त्री और बच्चे स्वागत करने के लिए स्टेशन पर आये। दूसरे दिन गाँव का पादरी डिब्बे से निकला। इसी तरह नित्य-प्रति लोग चढ़ते और उतरते थे। किंतु बुढ़िया का प्यारा निकोलस नजर न आता था। कभी-कभी किसी नीली टोपीवाले मुसाफिर को देखकर मेरिया लपककर उसके समीप पहुँचती। किंतु अन्त में निराश हो जाती थी !

एक दिन अपनी आँखों पर विश्वास न करके वह प्लेटफार्म झाड़नेवाले मेहतर से पूछने लगी, यह गाड़ी कहाँ जाती है ?

मास्को जाएगी ! उसने उत्तर दिया।

और आती कहाँ से है ? क्या कीफ से !

हाँ, कीफ से ! कीफ से !! मेहतर ने कुछ चिढ़कर उत्तर दिया।

बुढ़िया उत्सुकता पूर्वक उसी दिशा की ओर देखने लगी, जिधर कीफ बसा था। सायंकाल से ही अँधकार अधिक प्रगाढ़ होने लगता था। इसलिए उसकी दृष्टि अधिक दूर न जा सकी। फिर भी उसकी कल्पना के पट पर किसी नीले टोपी वाले विद्यार्थी की रूप-रेखा नाचने लगी। वह अपने पुत्र के ध्यान में तल्लीन होगई। उसके मुख पर एक वेदना का भाव झलकने लगा। किंतु उसी क्षण मेहतर प्लेटफार्म बुहारता हुआ समीप आगया। अब न वह नीली टोपी रही, न वह धुँधली प्रतिमा ! पुनः वही सूना प्लेटफार्म ! वही सन्नाटा !!

इस प्रकार आशा का अवलम्ब'लेकर मेरिया नित्य स्टेशन पर आती थी। पर, अन्त में निराश होकर अकेली ही घर लौटती। लौटते समय उसके पाँव भारी हो जाते और हृदय कसकने लगता। रास्ते भर वह निश्वास खींचती जाती। उसका मस्तिष्क अनवरत चिन्ताओं से आकुल होने लगता था। उस समय वह इतनी निस्सहाय और दुखी दृष्टिगत होती थी कि देखने वालों के मन में दया के भाव उमड़ने लगते थे।

कभी-कभी लौटकर घर आते समय, अचानक उसके मन में यह शंका उठ खड़ी होती, शायद कोलाहल में मैंने उसे देख न पाया हो ! संभव है, वह घर पहुँच गया हो और वहीं उपस्थित हो !

इस विचार के साथ ही बुढ़िया की आशा फिर जगमगा उठती; और वह जल्दी-जल्दी घर की ओर अग्रसर होने लगती थी। उसके पाँव तेजी से उठने लगते थे। ज्यों-ज्यों वह घर के समीप पहुँचती त्यों-त्यों उसका दिल जोरों से धड़कने लगता था। उसे दृढ़ विश्वास होने लगता था कि निकोलस आ गया होगा।

पर, साथ ही उसे कुछ चिंता भी होने लगती थी। कहीं उसके आते ही पिता उसे डाँटने न लगे! अब डाँटने-फटकारने से लाभ ही क्या है! जो गलती हो गई, वह तो सुधर नहीं सकती। यही क्या कम सौभाग्य की बात है कि लड़का सही-सलामत लौट आया है! वरन् किसका' बेटा सकुशल पढ़ाई समाप्त कर घर लौटता है!

इस तरह विचार करती हुई मेरिया जब मकान के हाते में प्रवेश करती, तो उसका हृदय और भी तेजी से धड़कने लगता था।

मकान तरह-तरह की लताओं से आच्छादित था। उसकी भी उम्र शायद उतनी ही थी जितनी मेरिया की। वह भी बुढ़िया की तरह वृद्ध और जर्जर हो रहा था!

मेरिया लड़खड़ती हुई मकान की सीढ़ियाँ चढ़ने लगती थी। दरवाजे की सिटकिनी खिसकाते समय तो उसका दिल एक गुप्त आशंका से काँपने लग जाता था। वह भयभीत होकर कमरे की ओर लपकती। पर, वहाँ अपने पति को अकेला पाकर उसकी

आँखों के आगे अँधेरा छा जाता था। वह निराश होकर बैठ जाती; और धीरे-धीरे कुछ गुनगुनाने लगती थी—नहीं आया! नहीं आया!

मैं तो पहले ही कहता था कि प्रतीक्षा व्यर्थ है। बूढ़ा स्टीपेन हाथ फैलाकर कहता, तुम व्यर्थ स्टेशन के चक्कर काटती हो! क्या अब भी सब मामला साफ नहीं हुआ?

बेचारी मेरिया कुछ भी उत्तर नहीं देती। तब दोनों ही चुप हो जाते और घंटों तक एक दूसरे के सामने ताकते हुए बैठे रहते थे। दोनों का हृदय किसी गुप्त पीड़ा से भारी होने लगता था।

जब तक मेरिया स्टेशन से नहीं लौटती तब तक उसका पति अपने फटे स्लीपर पहन कर कमरे में ही टहला करता था। वह बेचारा बहुत घबड़ाने लगता था, किंतु बार-बार खाँस कर अपने उद्वेग को दबाता रहता था। जब मेरिया अकेले लौटती तो वह गुर्रा कर उसी तरह कहने लगता, अब प्रतीक्षा व्यर्थ है।

रात के समय घंटों तक दोनों मौन साधे बैठे रहते। कमरे में सन्नाटा रहता और एक प्रकार का भयंकर अंधकार भी फैला रहता था। बेचारे अभागे माता-पिता उसी तरह चुपचाप बैठे रहते थे। उनके मन में एक ही विचार तरंगित होता रहता था। उस समय उनके चेहरे भी ऐसे दिखते थे, मानों तनिक भी छेड़ने से रो पड़ेंगे। शायद इसीलिए जबरन ओठ दाबकर वे बैठे रहते थे!

दीवार पर टँगी हुई घड़ी अपनी टिक-टिक की अनवरत

ध्वनि से सन्नाटे को भंग करती रहती थी। किन्तु वह भी मानो बूढ़े स्टीपेन के ही शब्द दोहराती रहती थी—प्रतीक्षा व्यर्थ है !...... प्रतीक्षा व्यर्थ है !......

❀ ❀ ❀ ❀

कभी-कभी स्थानीय बैंक का एक मुनीम; जो स्टीपेन का मित्र था, उनके यहाँ आया करता था। उस समय वह राजनैतिक कैदियों के बारे में ऐसी डरावनी बातें सुनाने लगता था कि दोनों पति-पत्नी काँप उठते थे।

जानते हो, ऐसे अपराधियों को कहाँ रखा जाता है ? मुनीम कहने लगता, किले के अँधेरे तहखाने में ! ऐसी कोठरी में जिसकी छत में खिड़कियाँ रहती हैं और दीवार में छेद !

तब वह कई तरह की गप्पें लगाता हुआ, वर्णन करता कि किस तरह उन छेदों से पानी छोड़कर कैदी डुबाये जाते हैं ! मैंने स्वयं उस दृश्य का एक चित्र देखा है ! वह कहता रहता था, एक लड़की अपनी कोठरी में खड़ी थी और दीवार के छेदों से पानी के फौव्वारे छूट रहे थे !

हे भगवन ! हे नाथ ! बेचारी मेरिया ऐसी भयंकर बातें सुन कर चीख उठती थी और उसकी आँखों में आँसू छलकने लगते थे।

अधिकतर सरकार ऐसे अपराधियों को फाँसी ही देती है !

मुनीम अपनी कल्पना दौड़ाता हुआ कहता, हाँ, कभी-कभी माफ करके छोड़ भी देती है। किन्तु ऐसा बहुत कम होता है।

इस तरह क्रान्तकारियों के संबन्ध में सैकड़ों तरह की गप्पें सुना-सुनाकर वह बेचारे बूढ़ों को डराया करता था। उसकी बातें सुनकर स्टीपेन और मेरिया इतने भयभीत हो जाते थे कि सो भी नहीं सकते थे। रात भर दोनों आह खींचते हुए कमरे में टहला करते।

यही कारण था, कि जब मेरिया स्टेशन से अकेली लौटती तो उसका पति कहने लगता था, अब उसको देखने की आशा करना व्यर्थ है!

स्टीपेन उत्तेजित होकर यह शब्द-कह तो देता, किन्तु थोड़ी ही देर बाद वह मकान से बाहर आ जाता था। बगीचे में उन लोगों की एक छोटी-सी फूस की झोपड़ी थी। उसे वे लोग स्नानागार कहते थे। बूढ़ा उसी कोठरी में घुस जाता और भीतर से दरवाजा बन्द कर लेता था। तब चुपके-चुपके उसी कुटिया में बैठा हुआ स्टीपेन, किसी नादान बालक की तरह सिसकने लगता था। वह जी भरकर रो लेता और एकान्त के उस निस्तब्ध समय में वह निराश होकर प्रार्थना करने लगता था—हे परम पिता! हे दयालु! बस वह सकुशल हो, वह जीवित हो, मुझे और कुछ भी न चाहिये!

❀ ❀ ❀ ❀

एक दिन जिस समय स्टीपेन आफिस गया था और मेरिया रसोईघर में कुछ काम कर रही थी, अचानक एक पुरानी घोड़ा गाड़ी खड़खड़ाती हुई आकर मकान के सामने खड़ी हो गई !

बुढ़िया के हाथों से झाड़ू छूट पड़ा। वह चौंककर खिड़की से झाँकने लगी। गाड़ी के निकट एक क्षीणकाय नवयुवक खड़ा था। वह विद्यार्थी जैसा दिख रहा था और उसकी पोशाक भी कालेज के लड़कों जैसी थी। पास ही एक पुरानी संदूक रखी थी। नवयुवक उसी सन्दूक को उठाने के लिए गाड़ीवान की प्रतीक्षा कर रहा था।

यद्यपि वह युवक मकान की ओर पीठ किये खड़ा था, किन्तु बुढ़िया के लिए तो उस पुरानी सन्दूक पर दृष्टि पड़ना ही पर्याप्त था। एक क्षण के लिए भी न रुककर, मेरिया दरवाजे की ओर लपकी......

ओह ! कोलिआ ! मेरे लाल ! चिल्लाती हुई बुढ़िया उस युवक के गले से लिपट गई। बेचारी माता का हृदय इतना उमड़ आया कि वह हँसती भी जाती थी और आँसू भी बहाती जाती थी ! उसे विश्वास ही न होता था कि उसका बेटा आ गया है। बार-बार उसका मुख चूम कर वह पूछ रही थी, तू कुशल से है ? अच्छा तो है ?

हाँ, मजे में हूँ—लड़के ने उत्तर दिया।

अरे बेटा ! हम दोनों तो तेरे लिए न जाने क्या-क्या सोच कर मर रहे थे ! मेरिया रुँधे कंठ से बोली, क्या उन्होंने तुझे माफ कर दिया बेटा ? हे भगवान ! आज मेरा कोलिआ......

बुढ़िया रोने लगी।

निकोलस ने मुस्कराते हुए अपनी माँ को ढाढ़स बँधाया। नवयुवक का चेहरा अत्यन्त दुर्बल दृष्टिगत हो रहा था। उसके मुख पर एक उदसीनता फैल रही थी और वह अपनी माँ के दुलार से कुछ-कुछ घबड़ाया-सा नजर आ रहा था। ऐसा लगता था मानो वह बहुत दिनों से ऐसे लाड़-प्यार का अभ्यस्त नहीं था।

पर, मेरिया के आनन्द का तो वारापार ही न था। उसका हृदय गद्गद् हो रहा था। वह बार-बार कह रही थी, ला बेटा ! वह सन्दूक मैं उठा लूँ ! अरे ! हमारी तो आशा ही मर चुकी थी !......मैं नित्य स्टेशन पर जाती थी, किन्तु समझ ही नहीं सकती थी कि तेरा क्या हाल है !

कोई असाधारण बात नहीं हुई—निकोलस ने लापरवाह की तरह कहा, मैं कुछ दिनों के लिए कैद हो गया था !......

ऐं ! क्या उसी किले के तहखाने में ! बुढ़िया चौंककर चिल्ला उठी, तब सचमुच ही परमात्मा ने मेरी प्रार्थना सुनी थी। उसी दयालु की कृपा से आज तू मुझे मिल सका है !......पर अब तो उन्होंने तुझे पूरी माफी दे दी न ?

नहीं, पूरी तरह तो नहीं—लड़के ने कुछ घबड़ाकर कहा, मुझे शर्तबन्दी पर छोड़ा गया है, और अब तुम्हारे ही पास रहने के लिए भेजा है।

बेटा ! मैंने स्टेशन पर एक विद्यार्थी से तेरे बारे में पूछा था। पर, वह कुछ नहीं जानता था।

हम सब एक दूसरे को कैसे जान सकते हैं माँ ! निकोलस बोला, मुझ जैसे तो सैकड़ों विद्यार्थी हैं !

अरे ! तू दुबला भी कितना हो गया है ! माता ने कहा, जरूर तूने कुछ खाया नहीं है। चलो, जल्दी खाना तयार करती हूँ !

२

आखिरकार निकोलस पुनः अपने घर आ गया।

घर की प्रत्येक बात पूर्ववत् ही थी। कमरे पहले की तरह ही साफ-सुथरे थे। खिड़कियों पर परदे लगे हुए थे। बगीचे में वही पुरानी लताएँ छा रही थीं। कमरों में भी उसी तरह कहीं फूल मुरझा रहे थे, तो कहीं घड़ी टँगी हुई थी। बैठक में रखी हुई गोलमेज और उसके पास ही सजाया हुआ सुंदर सोफा, निकोलस को बहुत पुरानी स्मृतियों की याद दिला रहे थे। सोफे की फूलदार चादर तो उसे इतनी परिचित मालूम हुई मानो अपने जीवन के पहले दिन से ही वह उसे पहचानता हो।

खिड़कियों के बीच की दीवार पर अखबार की एक साफ-

सुथरी फाइल लटक रही थी। मेज पर वही वर्षों पुरानी दावात पड़ी थी। खिड़की से बाहर का हरा मैदान नजर आ रहा था और वही सूनी सड़क भी दिख रही थी, जो पहले ही की भाँति उजाड़ और शांत थी। मकान के एक कोने पर वही पुराना कबूतरखाना था और हाते के फाटक पर पूर्ववत् ही हवा से चलनेवाली चक्की का एक छोटा-सा नमूना लगा हुआ था। मैदान में बत्तकें अपने छोटे-छोटे बच्चों के साथ फुदक रही थीं। चहारदीवारी के पास की झाड़ी में एक पालतू सूअर, कान फटफटाता हुआ ऊँघ रहा था।

यह सब देखकर निकोलस ने मुस्करा दिया। उसे ऐसा प्रतीत हुआ, मानो कल ही उसने यह बत्तकें, और सूअर देखे थे!

आकाश स्वच्छ नीलवर्ण का था। बादल का पता भी न था। निकट ही गाँव नजर आ रहा था। वह कितना प्रिय और सुखकर दृष्टिगोचर हो रहा था! ऐसा लगता था मानो निरभ्राकाश की छाया में निर्भय होकर वह अलसा रहा है! आसपास का सम्पूर्ण वातावरण ही एक तरह की निद्रा में व्यस्त था। अबाबीलें ऊँचे आकाश में मँडरा रही थीं। पास ही झाड़ी पर एक कौवा आराम कर रहा था। उसकी चोंच खुली थी और पर समेटे हुए था। नाले के समीप एक कुत्ता दृष्टिगत होता था। वह भी उदास नजर आता था और जबान निकालकर हाँफ रहा था।

सड़क पर नीची आँखें किये एक किसान चला जा रहा था। उसके पाँवों से सड़क की धूल उड़ने लगती थी। समीप ही दो लड़के दीख पड़ते थे। एक लड़का लकड़ी की सवारी करता हुआ दौड़ रहा था। दूसरा चिल्लाकर रो रहा था। शायद पहले लड़के ने उसका घोड़ा चुरा लिया था! बकायन की झाड़ियों पर पक्षियों की चें-चें हो रही थी। वे इस तरह लड़-झगड़ रहे थे, जैसे हाट के दिन ग्रामीण स्त्रियाँ झगड़ने लगती हैं! एक चिड़िया फुदकती हुई आई और खिड़की के समीप की डाल पर बैठकर उत्सुकता के साथ निकोलस की ओर देखने लगी! कुछ देर बाद दो और चिड़ियाँ आकर बैठ गईं और शोर मचाने लगीं!

निकोलस खिड़की के पास बैठ गया और सड़क की ओर देखने लगा। उसका मन उदास हो रहा था। आज प्रातःकाल अपने घर आते समय उसके मन में जो आनन्द का भाव उमड़ने लगा था वह अचानक ही न जाने कहाँ विलुप्त हो गया। वह उल्लास अब अस्थिर और अनित्य प्रतीत होने लगा। निकोलस को यह शांत वातावरण अत्यन्त सूना मालूम पड़ने लगा। यह उजाड़ सड़क, यह बराकें, यह कबूतरखाना, वह ऊँघता हुआ सूअर कितने उदास नजर आते हैं! कितने सूनसान!! निकोलस सोच रहा था, यहाँ किसी को भी शहर की हलचल का ध्यान नहीं है! किसी को भी विचार करने का समय नहीं है कि कहाँ

महत्वपूर्ण घटनाएँ हो रही हैं ! शहरों में जीवन कितना कोलाहल-मय होता है ! ऐसा मालूम होता है, मानो पानी उबल रहा है ! किंतु यहाँ के लोगों के लिए उस हलचल का क्या महत्व है ! जो क्षण-क्षण की घटनाएँ नगर के वातावरण में प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक महत्व रखती हैं, यहाँ के लोगों के लिए उनका कुछ भी मूल्य नहीं है !

विचार करते-करते निकोलस को मालूम हुआ, मानो उसका जीवन भी दो विभागों में बँट गया है। शहर की चहल-पहल में बीता हुआ जीवन और ग्राम्य वातावरण में व्यतीत होनेवाले दिवस ! दोनों में कितनी गहरी विभिन्नता है ! वह सोचने लगा, जब शहर के कोलाहल में बीते हुए दिवस किसी परदेश की कथा-जैसे अस्थिर प्रतीत होते हैं, यहाँ का वातावरण प्रकृति के नियमों की तरह कितना अटल और अपरिवर्त्तनशील है ! ऐसा लगता है मानो मनुष्य का सच्चा जीवन यही ग्रामीण-जीवन है !

कोलिआ ! तुझे मछली पसन्द है ?—इसी समय पीछे से आवाज आई।

निकोलस ने मुड़कर देखा। दरवाजे पर मेरिया खड़ी थी।

ले बेटा जरा नाश्ता कर ले ! बुढ़िया ने मेज पर गरम भोजन की थाली रखते हुए कहा, चख तो सही ! ये चीजें तो तू खूब चाहता था !

तब वह एक विचित्र ढङ्ग से मुँह बनाकर बोली, मैं नहीं समझ सकती कि तुम लोग क्यों विद्रोही बन बैठते हो ! तुम्हें कमी किस बात की है !

चूल्हे पर मक्खन उबल रहा था। अतएव मेरिया पुत्र का उत्तर सुनने के पहले ही रसोईघर की ओर दौड़ी। सच बात तो यह थी कि विद्रोही नवयुवकों की कमी का विचार करने की बुढ़या को कोई आवश्यकता ही नहीं मालूम पड़ती थी ! कुछ देर बाद वह एक थाली में रोटियाँ भर कर लाई और उन्हें मेज पर रखकर कहने लगी, देखो बेटा ! अपने पिता से झगड़ना मत ! संभव है, वे नाराज हों। किन्तु उनकी नाराजी अधिक समय तक नहीं रहती। मेरी राय है कि तुम उनकी बातें मान लेना। आखिरकार वे वृद्ध और अनुभवी हैं। तुम तो अभी पैरों पर खड़े होना ही सीख रहे हो ! पर, उनका तो जीवन ही समाप्त होने आया है, और तुम जानते ही हो कि सम्पूर्ण जीवन बिताना, इधर-उधर निठ्ठले भटकने के समान नहीं होता......

अच्छा, अच्छा ! निकोलस बीच में ही बोल उठा, पिताजी घर कब लौटते हैं ?

वही तीन बजे के लगभग।

और आजकल वे कहाँ काम करते हैं ?

उसी आफिस में ! बुढ़िया ने उत्तर दिया, उनकी तनख्वाह

भी वही है बेटा ! आज तक कुछ भी तरक्की नहीं हुई । फिर भी ईश्वर को धन्यवाद दो कि इतना मिल रहा है; क्योंकि तुम्हारे पिता अब लिख भी नहीं सकते। उनके हाथ इतने अधिक काँपते हैं कि...

काँपते हैं ? निकोलस ने घबड़ा कर पूछा ।

हाँ बेटा ! उन्हें एक तरह का लकवा होगया है । मैंने तुम्हें उस सम्बन्ध में लिखा भी था । मुझे आशा थी कि......बुढ़िया कहते-कहते रुक गयी और फिर बोली, अच्छा, पहले भोजन कर लो । उन बातों को दोहराने से अब क्या लाभ है !

निकोलस भोजन करने लगा । परंतु उसकी आँखें अपनी माँ की ओर ही एकाग्र थीं । वह सोच रहा था, ओह ! मेरी दो वर्ष की अनुपस्थिति में ही माँ कितनी बूढ़ी दिखने लगी है ! बाल सफेद हो गये हैं । मुँह लटक गया है । हाथ भी कितने छोटे मालूम पड़ते हैं ! अब तो कमर भी झुक गयी है ।

उधर मेरिया बार-बार उत्सुकता के साथ घड़ी देख रही थी । वह अपने पति की प्रतीक्षा करती हुई अत्यन्त व्यग्र हो रही थी । वह चाहती थी कि स्टीपेन शीघ्र लौटे और अपने पुत्र को देख कर आज के आनन्द में हाथ बटावे । पर, बुढ़िया कुछ-कुछ भय-भीत भी हो रही थी । उसे डर था कि उत्तेजित होकर कहीं स्टीपेन अपने पुत्र को चोट न पहुँचा बैठे ! अथवा निकोलस ही कहीं अपने पिता से कोई असहनीय बात न कह दे ! मेरिया इसी

आशंका से भयभीत हो रही थी। इस समय उसके मन में एक साथ ही आनन्द और भय के भाव उमड़ रहे थे !

अभी उनके आने में दो घंटे की देरी है मेरिया ने अपने पुत्र को पहले ही से सचेत कर देने के प्रयोजन से कहा, आज-कल उनके आफिस में इतनी अधिक मक्खियाँ हो गई हैं कि तुम्हारे पिता तंग हो जाते हैं। यही कारण है कि वे अधिकतर चिढ़े हुए ही आफिस से लौटते हैं।

इधर निकोलस के मन में भी एक हलचल मच रही थी। वह भी अपने पिता से शीघ्र मिलने के लिए उत्सुक हो रहा था। किन्तु साथ ही उसे यह भी भय लग रहा था कि कहीं पिता उसके सिर तरह-तरह के दोष लगाकर डाँटने न लगें ! सच बात तो यह थी कि कोई चाहे कितना भी समझाये, निकोलस यही मानता था कि उसने जो कुछ किया था वही उचित था। निकोलस का यह दृढ़ विश्वास था कि उसने जो राह पकड़ी थी, उसके अलावा दूसरी उपयुक्त राह ही नहीं ! अतएव यदि पिता के साथ कहीं इस सम्बन्ध में बातचीत छिड़ गई तो संभव था कि कुछ कलह हो जाये ! यही सोचकर निकोलस अधीर हो रहा था! वह जानता था कि उसने कोई गलती नहीं की थी। फिर भी उसके मन में रह-रह कर एक बेचैनी-सी फैल रही थी और वह कुछ-कुछ झेंप-सा रहा था।

कुछ समय बाद उसने घड़ी की ओर आँखें उठायीं। काँटा तीन के अंक की ओर खिसक रहा था।

लो! बाबा भी कैसे ठीक समय पर आ रहे हैं! लड़के ने खिड़की से झाँककर कहा।

सचमुच सामने मैदान में स्टीपेन धीरे-धीरे कदम रखता हुआ चला आ रहा था। निकोलस ने दूर ही से पहचान लिया। बूढ़ा बड़ी शान के साथ कदम रखता हुआ चला आरहा था। बात यह थी कि स्टीपेन अपने आपको कोई सामान्य मनुष्य नहीं समझता था। प्रत्युत वह अपनी गिनती गाँव के इने-गिने गणमान्य व्यक्तियों में किया करता था। यही कारण था कि वह अपने हाव-भाव ऊँची श्रेणी के लोगों-जैसे रखता था। इस समय भी उसके सिर पर भूरे रंग की चमकीली टोपी थी, जिस पर एक तगमा लगा हुआ था। हाथ में एक अच्छी छतरी थी और बगल में कागज रखने का एक बस्ता।

बाबा अपने हाथों में क्या लिए हुए हैं? निकोलस ने माता से पूछा।

वह उनका बस्ता है, मेरिया ने नम्रता के साथ उत्तर दिया—चाहे उसमें कुछ भी न हो, तो भी वे उसे साथ ही रखते हैं। यही छतरी का भी हाल है। चाहे बरसात न हो तो भी छतरी उनके हाथ में रहा करती है!

स्टीपेन इसी समय बत्तकों के समीप होकर जा रहा था। अपने बच्चों के निकट आते देखकर एक बत्तक उसकी ओर दौड़ी। वह अपनी गरदन निकालकर बूढ़े के पास इस तरह आई मानो काटने का इरादा करती हो। स्टीपेन रुक गया और अपनी उँगली उठाकर पुचकारने लगा। तत्काल ही बत्तक ने अपनी गर-दन झुका ली और वह अपने बच्चों में जा मिली!

ओ हो! आ गये!! बूढ़े ने मुस्कराकर कहा। पर, वह उसी चाल से आता रहा। बेटे को देखकर उसके मन में कोई विशेष आनन्द नहीं हुआ। उसने आफिस में ही निकोलस के आने का समाचार पा लिया था। फिर भी उसने आने में जल्दी नहीं की। ऐसा दिखता था, मानो बूढ़ा अपने दिल के भावों को इस उद्दंड नवयुवक के समक्ष प्रकट करना अनुचित समझता है! गत रात्रि को ही उसने निकोलस के सम्बन्ध में कितना भयंकर स्वप्न देखा था! ऐसा दिखा था मानो निकोलस को प्राण-दण्ड की आज्ञा हुई है और वह माता-पिता से अंतिम बिदा माँगने आया है! उसके बाल बिखर रहे हैं। ओठ सूखे और फटे हुए हैं। मुँह पीला हो गया है। पाँव नंगे हैं......स्टीपेन इस सपने को याद कर अब भी काँप उठता था।

बाबा! निकोलस चिल्ला उठा और अपने पिता के गले से लिपट गया। बूढ़े ने भी उसको छाती से लगा लिया। किन्तु

स्टीपेन का आलिंगन ठंडा था। उसमें उत्तेजना का अंश किंचित् मात्र भी न था।

क्या तुम्हें आये बहुत देरी हो गई है? उसने खाँसते हुए पूछा।

मैं आज बहुत ही सुबह आया हूँ! लड़के ने उत्तर दिया।

चलो ठीक! मुझे बहुत प्रसन्नता है! स्टीपेन ने ऐसे स्वर में कहा मानो किसी पाहुने का स्वागत कर रहा हो!

बुढ़िया भी मकान की सीढ़ियों पर आ गई थी। पर, वह पिता और पुत्र का मिलन न देख सकी। जब उसने देखा कि दोनों चुपचाप घर की ओर चले आ रहे हैं और एक दूसरे के साथ न तो बात करते हैं, न ऊपर निगाह ही उठाते हैं; तो वह घबड़ा गई। उसने देखा कि स्थिति बेढब हो रही है। अतएव उसने स्वयं दखल देना आवश्यक समझा।

ईश्वर को धन्यवाद दो स्टीपेन! कि हमारा कोलिआ लौट आया—वह बोली, तुमने निरर्थक ही मुझे कल के सपने का हाल सुनाकर घबड़ा दिया था! देखो यह तो मजे में है! अच्छा चलो, अब भोजन कर लो। पर, आज तुम उदास क्यों हो? क्या आफिस में आज भी मक्खियों ने बहुत सताया?

स्टीपेन तुरन्त भाँप गया कि क्यों उसकी पत्नी मक्खियों के बारे में पूछ रही है। अतएव उसने कुछ भी उत्तर न दिया। तत्काल खाना आ गया और तीनों मेज के समीप बैठ गये।

भोजन के समय भी बूढ़ा बहुत ही गम्भीर बना रहा। वह ऐसे शिष्टाचार के साथ खा रहा था, मानो कोई रस्म अदा कर रहा हो।

अच्छा! आखिरकार बूढ़े ने पूछा, तो तुम जेल की हवा खा आये ?

हाँ, निकोलस ने धीरे से उत्तर दिया।

और अब शर्त्तबन्दी पर छोड़े गये हो ?

जी हाँ।

बूढ़ा कुछ देर तक चुप रहा और अब अधिक खुलकर बातें करने लगा।

और अब क्या करने का इरादा है भाई ?

कुछ दिन बाद फिर पढ़ना शुरू करूँगा, निकोलस ने दबी जबान से कहा।

इसका तो यह अर्थ हुआ कि फिर से श्रीगणेश करोगे! स्टीपेन बोला।

और यदि उन्होंने फिर धक्के देकर निकाल दिया तो? फिर नया आरम्भ करोगे, क्यों ?

खैर, यह आरम्भ और अंत तो चलता ही रहता है! मेरिया स्थिति को उलझते देख बोल उठी, भगवान ने चाहा तो कोलिआ की पढ़ाई भी एक दिन पूरी हो जायेगी!

अरे, अन्त तो सभी वस्तुओं का होता है मेरिया! बूढ़ा

अपना मुँह पोंछता हुआ कुछ रूखेपन के साथ बोला। यह तो प्रकृति का अटल नियम ही है। हम दोनों का भी एक दिन अन्तिम समय आ पहुँचेगा ! तब लड़के की ओर मुड़कर उसने पुनः पूछा, अच्छा; तुम्हें स्कूल से निकालने का क्या कारण था भाई ?

मैंने आन्दोलन और हलचल में कुछ भाग लिया था।

उंहूँ !!......और कैद करने की क्या जरूरत थी ?

मैं नहीं जानता !

अच्छा ! पर दुनिया में कोई भी काम बिना कारण नहीं होता समझे ! स्टीपेन ने कुछ सख्त होकर कहा, सचमुच कोलिआ ! तुमसे मैं ऐसी आशा नहीं करता था ! तुमने तो एक नाटक ही बना डाला !!

नाटक ! यह तो आप खूब कहते हैं ! लड़के ने गुनगुनाकर कहा। वह बेचैनी के साथ अपने बालों में उँगली फेर रहा था।

ओफ ! क्या इसी दिन के लिए हम लोगों ने आठ साल तक तुम्हारी फीस दी, किताबें खरीदीं और परवरिश की ? क्या इसी लिए हमने तुम्हें छोटे से बड़ा बनाया ? स्टीपेन उत्तेजित होकर कहने लगा, हम तो आशा करते थे कि एक दिन तुम पढ़-लिखकर बड़े बनोगे और हमारा परिश्रम सफल होगा। सोचा था हमारी सारी मेहनत किसी अच्छे रूप में वापिस हमारे ही

पास आवेगी ! पर अब तो यही दिखता है कि शायद किसी दूसरे लोक में ही इनका बदला मिलेगा ! और वह भी जलते अँगारों के रूप में !

चलो रहने दो ! इसी समय पुनः मेरिया बीच में बोल उठी। उसने देखा कि बातचीत का सिलसिला गलत राह पकड़ रहा है। इसमें उसकी रोटियाँ गिनने की क्या जरूरत है ! दुनिया में सभी लोगों के बाल-बच्चे होते हैं। सब अपने बेटा-बेटी के लिए खर्च करते हैं ! क्या तुम्हारे ही लड़का है, औरों के नहीं ? और यदि लड़के को कपड़ों की और किताबों की जरूरत पड़ती है तो उस बेचारे का क्या दोष ? राम राम ! इस तरह उसके कपड़े-लत्ते की गिनती करना क्या शोभा देता है ? यह काम अनुचित ही नहीं, एक भारी पाप है !

नहीं, नहीं, मेरा यह मतलब नहीं था—बूढ़ा घबड़ाकर कहने लगा, शायद भूल से मेरे मुँह से कोई अपशब्द निकल गया होगा। अरे भाई ! हम लोगों का इसमें क्या स्वार्थ है ? अब हम बूढ़ों को जीना ही कितने दिन है ? और हमें कपड़े-लत्ते गिनने से लाभ भी क्या होगा ? सचमुच यदि मेरे मुँह से कोई शब्द, उत्तेजना में निकल गया हो तो मुझे रंज है। मेरा तो मतलब यही था कि लड़का जल्दी पढ़-लिखकर अपने पैरों पर खड़ा हो जाये ! हमारा बेटा प्रतिष्ठित हो जाये, तो हम सुख से विश्राम करें !

और इसमें अधिक बात बढ़ाने की आवश्यकता ही क्या है? क्या प्रत्येक मनुष्य को अपने-अपने सुख का ध्यान नहीं है!......

सबको सुख की चिंता है निकोलस धीमे स्वर में बोला, पर प्रत्येक मनुष्य के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार के सुख हैं। किसी को इज्जत ही सुख से अधिक प्यारी मालूम देती है......

हाँ, हाँ, भूखों मरने योग्य हो जाने में ही बड़ी भारी इज्जत है! बूढ़े ने उत्तेजित होकर कहा, सच है हम बुड्ढे लोग आपकी बातें क्या समझें! भगवान हम-जैसे निरर्थक लोगों को जिंदा ही क्यों रख रहा है? बस, हमें तो मट्टी की तरह कब्र में फेंक देना ही उचित है!

मेरिया ने क्रोध के साथ स्टीपेन की ओर देखा और चुप रहने का इशारा किया। तब वह पुत्र की ओर मुड़कर कहने लगी, तूने तो बातचीत में फँसकर कुछ खाया ही नहीं बेटा!

धन्यवाद! मुझे अब कुछ भी नहीं चाहिये—निकोलस ने उत्तर दिया।

धन्यवाद देने की कोई बात नहीं है! बूढ़े ने एक आह भर कर कहा।

निकोलस ने अपनी टोपी पहन ली और उठ खड़ा हुआ।

क्यों, क्यों कहाँ जाते हो बेटे? बुढ़िया ने चिन्तित होकर पूछा।

कुछ नहीं! जरा टहलने जा रहा हूँ; कहकर निकोलस चला गया।

जब निकोलस मकान की सीढ़ियाँ उतर गया, तब कमरे में एक क्रोध भरी कानाफूसी होने लगी। मेरिया अपने पति को डाँट रही थी, तुम्हें इतनी जल्दी एक साथ ही नहीं टूट पड़ना चाहिये था! चाहे जैसा हो, है तो हमारा इकलौता ही! और वह बेचारा अपने काम के लिए क्या शेखी बघारता है? वह तो दया का पात्र है!

साथ ही स्टीपेन भी बार-बार दबी आवाज में कह रहा था, पर, मैंने उसे कौन-सी बुरी बात कह दी मेरिया? मैंने उसको कोई विशेष बात तो कही भी नहीं!

३

निकोलस टहलते-टहलते गाँव से भी दूर चला गया। वह सड़क के किनारे धीरे-धीरे चल रहा था। आस-पास वृक्षों की डालियाँ झुक रही थीं। निकोलस उनके चिकने पत्ते तोड़ता जाता था और उन्हें अपने हाथों में मलने लगता था। कभी-कभी वह सीटी बजाने लगता था। किंतु उसके प्रत्येक हाव-भाव में आज उदासीनता झलक रही थी और उसका मस्तिष्क गंभीर विचारों में डूब रहा था।

चलते-चलते वह एक जगह रुक गया और आस-पास का दृश्य देखने लगा। क्षितिज तक गेहूँ के हरे-हरे खेत समुद्र की तरह लहरा रहे थे। मैदान का अन्त ही नहीं दिखता था।

चारों ओर सन्नाटा छा रहा था। सिर्फ एक चिड़िया कहीं आकाश में उड़ती हुई गा रही थी। साथ ही किसी झाड़ी में छिपी हुई एक कोयल कभी-कभी अपने तीव्र स्वर से सारे वातावरण को गुँजा देती थी। निकोलस के दिल में यह दृश्य देखकर तरह-तरह के उदासीन भाव उमड़ने लगे और वह एक प्रकार की निराशा से प्रभावित होने लगा।

यहाँ प्रत्येक वस्तु अपने ही ध्यान में कितनी तल्लीन दृतिगत होती है, वह विचार करने लगा। शहर की वे सब बातें, जिनके लिए मैं वहाँ रहता था, यहाँ की तुलना में कितनी अनित्य लगती है! नगर के वातावरण में जो बातें महत्वपूर्ण मानी जाती हैं, उन्हें यहाँ कोई पूछता भी नहीं। यहाँ तो सबसे मुख्य वस्तु स्वास्थ्य है और यदि प्रत्येक वस्तु अपनी-अपनी प्रकृति के अनुसार स्वस्थ रहे तो जीवन का सारा प्रश्न ही हल हो जाता है। यदि यहाँ किसी बात की आवश्यकता है तो यही कि सब लोग हरे-हरे मैदानों के इस शांत चित्रपट को देखते रहें; प्रकृति की इस अपरिमित शोभा पर विचार करते रहें और इस दयालु आकाश के नीचे विश्राम करते रहें। यहाँ किसी भी वस्तु की लालसा करना व्यर्थ है। जिस तरह यह निर्विकार आकाश, यह स्थावर प्रकृति, यह शांत वातावरण किसी भी वस्तु की कामना नहीं करते; हमें भी उसी तरह किसी नवीन इच्छा की तृप्ति के

लिए तड़पना नहीं चाहिये । यहाँ तो प्रत्येक बात अपनी-अपनी प्रकृति के अनुसार पूर्ववत् ही होती रहेगी । उसी तरह जाड़े के बाद वसन्त आयेगा और वसन्त के बाद फिर जाड़ा ! कभी हरे-हरे खेत होंगे; कभी बरफ से ढके हुए मैदान ! उसी तरह बार-बार वसन्तकाल में पक्षियों का कलरव होगा। किसानों की गाड़ियाँ खड़खड़ायेंगी । सोमवार को हाट पड़ेंगे और शराबी किसान इकट्ठे होंगे ! इसको छोड़कर यहाँ कोई भी नवीन बात नहीं होगी !

सूर्य अस्ताचल को जा रहे थे। समीप के जगंल में पुनः कोयल की आवाज गूँज उठी । उसके स्वर में कितनी वेदना थी ! ऐसा लगता था मानो चिल्ला-चिल्ला कर वह संसार के अपरिवर्तनशील वातावरण की निन्दा कर रही हो और कह रही हो कि जगत में नूतनता कुछ भी नहीं है । वही बातें बार-बार हो रही हैं, जो सौ वर्ष पहले भी होती थीं !

अब मैं इन्ही जंगलों और चरागाहों में आकर दिन व्यतीत करूँगा ; निकोलस ने गाँव की ओर लौटते हुए सोचा, इन्हीं नदी-नालों के किनारे शिकार खेलकर जो बहलाता रहूँगा !

डूबते हुए सूर्य की किरणें गाँव के मकानों पर अठखेलियाँ कर रही थीं । मकानों के सामने गाँव के बालक अपने-अपने खेल में व्यस्त होकर शोर मचा रहे थे। समीप ही उनकी माताएँ अपने-अपने आँगन में बैठी हुई छोटे बच्चों को स्तनपान करा रही थीं ।

निकोलस चलते-चलते उन परिचित मकानों और गलियों को देखता जाता था। उसे वे घर और सड़कें, मैदान और तालाब, इतने परिचित मालूम हो रहे थे, मानो उनसे कभी वियोग-ही न हुआ हो!

नमस्कार! इसी समय पीछे से किसी का स्वर सुनायी दिया। निकोलस ने मुड़कर देखा। एक ग्रामीण नवयुवक खड़ा था और टोपी उठाकर अभिवादन कर रहा था।

ओहो! तुम हो गेवरीलो?

हाँ, कहो, कभी याद भी करते हो? गेवरीलो ने कहा।

क्यों नहीं!

याद है, हम बचपन में साथ ही खेलते और लड़ते थे?

अच्छा! तुम मजे में तो हो? निकोलस ने पूछा।

बहुत आनन्द में हूँ गेवरीलो ने कहा, आज कल मैं यहाँ के एक भोजनालय में नौकरी करता हूँ। आठ रूबल मिलते हैं।

बस और क्या चाहिये? कहो तुम कैसे हो? पढ़ाई समाप्त हो गयी कि नहीं? या अब भी अपने आपको बरबाद कर रहे हो!

दो वर्ष तक मेरी पढ़ाई का सिलसिला छूट गया था।

क्यों? गेवरीलो ने विस्मत होकर पूछा।

निकोलस ने अपनी पढ़ाई में बाधा पड़ने का कारण बताना

चाहा। किंतु गेवरीलो की लापरवाही देखकर उसने कुछ भी नहीं कहा और अपने मित्र से बिदा माँगी।

अच्छा भाई निकोलस! गेवरीलो ने कहा, कभी मेरे स्थान पर भी आने की कृपा करना! जरूर आना! काफी अच्छी मंडली जुटा करती है। शराब भी उम्दा रहती है और खेलने के लिये बिलियार्ड भी है।

इसी समय सड़क की दूसरी पटरी पर एक व्यक्ति को जाते हुए देखकर गेवरीलो ने टोपी उठा कर अभिवादन किया और निकोलस से कहा, यही हमारा हिसाब-किताब जाँच करते हैं। इनका नाम इवान पेट्रोविच हैं। बड़े भले आदमी हैं।

निकोलस ने उस व्यक्ति की ओर देखा और गेवरीलो से पूछा, यह वही केलिआजिन तो नहीं है?

हाँ, हाँ वही हैं—गेवरीलो ने मुस्कराते हुए कहा।

केलिआजिन सड़क की पटरी पर इस तरह चल रहा था मानो कई वर्षों से थका हुआ हो! निकोलस केलिआजिन को अच्छी तरह पहचानता था। जिस समय निकोलस स्कूल के निचले दर्जों में पढ़ता था, केलिआजिन भी उस समय किसी ऊँची कक्षा का विद्यार्थी था। स्कूल के सब लड़के केलिआजिन की बुद्धि और होशियारी के कायल थे और उससे ईर्षा करते थे। निकोलस भी केलिआजिन को उस समय सबसे अधिक सुखी

और बुद्धिमान व्यक्ति समझता था। वह निकोलस को तरह-तरह की किताबें देता रहता था और कहा करता था कि उसका विचार भविष्य में किसी धार्मिक कार्य के लिए जीवन-अर्पण करने का है। पर, आज उसी केलिआजिन को एक साधारण मनुष्य की तरह देखकर निकोलस को बड़ा आश्चर्य हुआ। वह धारीदार पायजामा पहने था और अब पहले की अपेक्षा अधिक तगड़ा नजर आता था। उसके कन्धे अधिक चौड़े हो गये थे। आँखों में एक उदारता झलक रही थी और प्रत्येक हाव-भाव में एक तरह का सन्तोष प्रदर्शित हो रहा था। ऐसा लगता था मानो वह व्यक्ति अपने जीवन की समस्त आकांक्षाओं को पा चुका है! अब उसे किसी बात के लिए हाय-हाय मचाने की आवश्यकता नहीं थी। अब वह किसी गृहस्थ की तरह समय पर भोजन करने और शाम को अखबार पढ़ने में ही निमग्न रहा करता था; मानो उसके लिए अब जीवन में कुछ भी कर्तव्य शेष नहीं है!

इवान पेट्रोविच! निकोलस चिल्लाया।

केलिआजिन ने मुड़कर देखा। वह मुस्कुरा दिया। किन्तु समीप नहीं आया; वहीं खड़ा-खड़ा वह निकोलस की प्रतीक्षा करता रहा।

गेवरीलो से बिदा होकर निकोलस केलिआजिन के पास गया और उससे हाथ मिलाया।

अच्छा, आगये ! केलिआजिन ने अपना हाथ बढ़ाते हुए कहा।

जी हाँ।

आजकल किस विषय का अध्ययन कर रहे हो ? क्या विज्ञान की पढ़ाई चल रही है ?

विज्ञान ! निकोलस बोला, अजी नहीं; विज्ञान मेरे स्वभाव के उपयुक्त नहीं है !

क्यों ?

विज्ञान का प्रवाह तो अत्यन्त शान्ति के साथ प्रवाहित होता है और मैं तो......

बड़े झगड़ालू हो, क्यों ? ठीक मेरी पत्नी की तरह ! केलि-आजिन ने निकोलस की बात काटकर कहा और वह अपनी ही मजाक पर जोर से हँसने लगा।

निकोलस ने अपने अध्ययन में बाधा पड़ने का पूरा किस्सा कह सुनाया।

मैं तो कहता हूँ भाई ! इस झगड़े से कुछ भी लाभ नहीं है, केलिआजिन कहने लगा, अब इससे कुछ भी नहीं मिल सकता। हमारे नवयुवक व्यर्थ जीवन नष्ट करते हैं। आखिर तुम लोग अमीरों के साथ क्या करना चाहते हो ? तुम उनको सुधार न सकोगे ! वे सब जाहिल और बेवकूफ हैं। बस, अपना पेट भरने, शराब पीने और खूब सोने के सिवा उन लोगों का कुछ काम ही नहीं है।

केलिआजिन को अमीरों से बड़ी चिढ़ थी। उसका मत था कि उन गधों के लिए एक फटे जूते का भी बलिदान करना उचित नहीं है।

मेरे दोस्त! उसने कहा, मैं भी इन लोगों को सुधारने की धुन में बहुत कुछ बलिदान कर चुका हूँ। पर अब उस मूर्खता के लिए पछताता हूँ। देखो न, जब कि मेरे सहपाठी लोग ऊँचे-ऊँचे पदों पर हैं, मैं अभी एक मामूली क्लर्क ही हूँ! मैं आज-कल स्थानीय आबकारी के महकमे में काम करता हूँ। वह देखो! जो लाल इमारत दिख पड़ती है, वही हमारा दफ़्तर है। अच्छा अब बिदा! और कभी मिलना!

दोनों एक दूसरे से बिदा हुए।

सन्ध्या आ पहुँची थी। चौपाये चरागाह से लौट रहे थे। अचानक ही गाँव का निस्तब्ध वातावरण एक कोलाहल से गूँज उठा। गायें रम्भाने लगीं। बैल डकारने लगे। कहीं बछड़ों का मधुर स्वर गूँज रहा था। कहीं भेड़ों की में-में सुनायी पड़ती थी। ग्रामीण स्त्रियाँ चिल्ला-चिल्ला कर मुर्गियों को पुकार रही थीं। ग्वाले रोष के साथ गायों को हाँक रहे थे। बीच-बीच में गड़ेरियों के चाबुक की आवाज भी गूँज उठती थी!

क्षण भर में ही सारा वायु-मण्डल धूल से भर गया। अस्त होते हुए सूर्य की अन्तिम किरणों से प्रकाशित सारा आकाश

सुनहला और रमणीय प्रतीत हो रहा था। ग्राम्य जीवन की यह सबसे मनोरम और सुखप्रद वेला थी।

४

दिन के बाद दिन बीतने लगे। इस तरह एक सप्ताह व्यतीत हो गया।

एक दिन स्थानीय पुलिस ने स्टीपेन को बुला भेजा। उन्होंने उनका बयान लिया। साथ ही निवेदन किया कि निकोलस को भी किसी दिन कोतवाली भेजें, ताकि कुछ जरूरी कागजात पर दस्तखत करा लिए जावें। स्टीपेन पुलिस के दारोगा से भी जाकर मिला। दारोगा एक हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति था। उसका स्वभाव बहुत अच्छा था। लोग कहते थे कि उसकी सूरत जनरल ड्रेगोमिराफ से बहुत कुछ मिलती थी। दारोगा साहब को इस बात का विशेष गर्व भी था।

बूढ़ा दारोगा स्टीपेन का मित्र था। निकोलस को वह अपना धर्म-पुत्र समझता था। उस दिन निकोलस के विषय में उसने स्टीपेन से क्या कहा यह तो किसी को पता नहीं। किंतु कोतवाली जाने के दिन से स्टीपेन अपने पुत्र के साथ अधिक सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करने लगा। सिर्फ कभी-कभी वह निकोलस से कहा करता था, मुख्य बात तो यह है कि तुम्हें सबके साथ मिलना-जुलना चाहिये और अधिक बुद्धिमानी का व्यवहार करना

चाहिये। तुम अपने धर्म-पिता के घर कभी क्यों नहीं जाते ? यह कोई भली बात नहीं है कि......

अच्छा, अच्छा ! मैं उनके पास जाऊँगा निकोलस बीच में ही बोल उठता। किंतु वह अनेकों बार निमन्त्रण पाकर भी न तो दारोगा के ही घर जाता था, न कभी कोतवाली ही। अब निकोलस अकेला ही रहना अधिक पसन्द करता था। अतएव दिन भर कन्धे पर बन्दूक लेकर नदी के किनारे, जङ्गलों और चरागाहों में घूमता रहता था।

एक दिन शाम के समय निकोलस इसी तरह जङ्गल की सफर करके घर लौट आया। दोनों बूढ़े बगीचे में एक झाड़ी के पास बैठे थे। समीप ही चाय का पानी उबल रहा था। स्टीपेन चाय पीता हुआ अखबार पढ़ रहा था। मेरिया अपने पति के मोजे सी रही थी। बूढ़े के चेहरे पर एक नाराजी झलक रही थी। मेरिया भी भयभीत-सी दृष्टिगत होती थी। शायद निकोलस ही के बारे में बातचीत करते-करते दोनों झगड़ पड़े थे।

माँ ने तत्काल चाय का एक गिलास भरकर निकोलस के हाथ में दिया और सहानुभूतिपूर्ण स्वर से पूछा, कहाँ गये थे बेटा ?

यों ही टहलने के लिए ! निकोलस ने उत्तर दिया और पास की झाड़ी पर अपनी टोपी पटक दी। तब वह मेज के सामने बैठ गया और चाय पीने लगा।

वाह ! क्या ही अच्छा व्यवसाय बनाया है ! स्टीपेन ने व्यंग के साथ कहा। उसकी आँखें अखबार की ओर ही झुकी हुई थीं।

निकोलस का चेहरा कुछ सुर्ख हो गया। किंतु उसने अपना धैर्य नहीं छोड़ा। वह कुछ भी नहीं बोला। बहुत देर तक टेबल के आस-पास एक सन्नाटा छाया रहा। सिर्फ मेरिया ही कभी-कभी अंट-संट वाक्य कहकर उस निस्तब्धता को भंग कर रही थी। मैं आशा करती हूँ, बुढ़िया यों ही बकने लगती थी, आज बरसात नहीं होगी !......

आज कोतवाली से एक नोटिस आया है ! बहुत देर तक चुप रहने के बाद स्टीपेन ने अखबार अलग रखकर कहा, मैंने तुम्हें बार-बार कहा था कि जाओ ! पर तुम तो सुनते ही नहीं ! आखिर मुझे किस झंझट में फँसाने वाले हो भाई ?

निकोलस ने अपने पिता को समझाने का प्रयत्न किया कि नोटिस में कोई डर की बात नहीं है और पुलिस के यहाँ से इत्तलानामा आना कोई असाधारण घटना भी नहीं है ! किन्तु एक भी बात बूढ़े के गले में नहीं उतरी; बल्कि वह और भी ज्यादा बिगड़ खड़ा हुआ और कहने लगा, मुझे क्या सिखाते हो ; क्या मैं खुद नहीं समझता ? आज सारा गाँव मेरी ओर उँगली उठा-उठा कर हँस रहा है और तुम अपनी ही अक्ल बघारते हो ! मैं यह पूछता हूँ कि तुम दारोगा के पास क्यों नहीं जाते ?

इस तरह चालबाजी करके तुम मेरा ही अपमान करते जरा नहीं हिचकते !

वाह ! आज तो अवश्य ही कुछ माल बना है ! इसी समय हाते की चहारदीवारी की ओट से किसी का परिचित स्वर सुनाई दिया। स्टीपेन के लँगोटिया दोस्त, वहाँ मुनीम महाशय थे।

क्या चाय-पानी हो रहा है ? उसने मीठे स्वर से पूछा।

आइये ! आइये !! मेरिया ने नम्रता दिखाते हुए कहा। ऐसे मौके पर मुनीम का आगमन उसे खटका नहीं। वरन् वह प्रसन्न हुई कि उनके आने से एकाएक बात बढ़ते-बढ़ते रुक गई।

फाटक खुलने का शब्द सुन पड़ा और एक ठिगने व्यक्ति ने बगीचे में प्रवेश किया। उसके सिर पर फूस की टोपी थी और अपने हाव-भाव तथा बोल-चाल से वह पूरा नाटक का मसखरा ही दिखता था।

दुआ-सलाम हुआ। स्टीपेन ने अपने पुत्र का परिचय कराया।

ओहो ! महाशय साम्यवादी जी !! आगन्तुक ने कहा, आप से मिलकर तो मेरी खुशी का ठिकाना नहीं है ! यों तो दूर से आपके दर्शन करने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ था। किन्तु समीप आने का तो सुअवसर आज ही मिला है !

फिर से चूल्हा जलाया गया और चाय का पानी तैयार हुआ। चाय-पानी के बाद पुनः बातचीत प्रारम्भ हुई। जब कभी

स्टीपेन के मकान पर कोई नवीन व्यक्ति आता, तो निकोलस से तरह-तरह के प्रश्न पूछे जाते। आज भी हमेशा की तरह वैसे ही प्रश्न पूछे जाने लगे।

हाँ, तो आप डाक्टरी के लिए पढ़ रहे थे?

जी हाँ, निकोलस ने सदा की तरह उत्तर दिया।

और आप के दो वर्ष निरर्थक ही बीत गये?

हाँ।

सचमुच ही बुरा हुआ! मुनीम ने सहानुभूति दिखलाते हुए कहा।

किन्तु अब तो आप अवश्य पछताते होंगे?

इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए स्वयं स्टीपेन वार्तालाप के क्षेत्र में कूद पड़ा, सो तो ठीक है! किन्तु लोग यह भी तो कहते हैं न, कि कुहनी निकट होने पर भी दाँत से नहीं काटी जा सकती!

आपको ऐसा कौन-सा अभाव खटकता था महाशय? मुनीम ने फिर पूछा, किस बात से आप नाराज हो उठे थे?

निकोलस ऐसे प्रश्नों का उत्तर देने में बड़ी कठिनाई का अनुभव करने लगता था। अतएव वह यों ही कुछ शब्द कह देता था। तब उसका बाप अत्यन्त उत्तेजित हो जाता। आज भी स्टीपेन हमेशा की तरह चिल्ला उठा, लीजिये जनाब! यह लोग अपने आपको भी नहीं जानते! मैं तो कहता हूँ कि एक जबर-

दस्त फटकार मिलने पर ही ऐसे लोगों की अक्ल ठिकाने आ सकती है !

तब दोनों बूढ़े तत्कालीन आन्दोलन और राजनैतिक हलचल के बारे में बातचीत करने लगे । मुनीम इंग्लैण्ड का जबरदस्त विरोधी था । अंग्रेजों की प्रत्येक चाल में वह राजनैतिक कूटनीति की ही बू पाता था । यद्यपि वह अपने विचारों को स्पष्ट रूप में व्यक्त नहीं करता था, तथापि उसका आशय यही था कि देश के विद्यार्थियों को उभाड़ने में भी मुख्यतया विदेशियों का ही गुप्त हाथ था । पर स्टीपेन इस बात को असंगत समझता था । अतएव मुनीम को भारी विद्वान् समझते हुए भी वह उसकी इस बात से सहमत नहीं हो सकता था ।

मैं समझ नहीं सकता विदेशी लोग किस तरह हमारे देश पर प्रभाव डाल सकते हैं ! स्टीपेन ने कहा ।

अजी जनाब ! ये विदेशी लोग बड़े धूर्त्त हैं ! मुनीम ने घृणा का भाव दिखलाते हुए कहा, यह सम्पूर्ण हलचल यहूदियों के मार्फत मचायी जा रही है ! आप सच जानें यह विदेशियों के ही हथकण्डे हैं !

सम्भव है भाई ! स्टीपेन ने स्वीकार करते हुए कहा, किन्तु यह तो कहो, अब मेरी स्थिति कैसे सुलझ सकती है !

वाह ! इसका तो साधारण-सा नुस्खा है ! मुनीम बोला,

दारोगा तुम्हारे पुत्र का धर्म-पिता है न ? वह यदि चाहे तो क्या नहीं कर सकता ? जनरल ड्रेगोमिराफ जैसे बड़े आदमी का वह रिश्तेदार है ! उसके लिए कौन-सी बात असम्भव है ?

वह ड्रेगोमिराफ का रिश्तेदार नहीं है ! स्टीपेन बोला, सिर्फ दोनों के चेहरों में समानता है !

अजी नहीं ! मुनीम ने अपनी बात रखने के लिए कहा, मुझे अच्छी तरह मालूम है कि वह जनरल का निकट सम्बन्धी है। मैं कहता हूँ निकोलस को दारोगा के पास अवश्य भेजो और स्वयं तुम भी जाओ !

अरे भाई ! मैं तो पहले ही उसके यहाँ हो आया हूँ ! स्टीपेन बोला, और इन महाशय को भी सौ बार कह चुका हूँ कि अपने धर्म-पिता से जाकर मिलो । किन्तु इनका तो दिमाग ही आसमान में चढ़ रहा है !

स्टीपेन अपने लड़के की लापरवाही देखकर अत्यन्त उत्तेजित हो उठता था। कभी-कभी वह उत्तेजना इतना गम्भीर स्वरूप ले लेती थी कि मेरिया और निकोलस दोनों ही भयभीत हो जाते थे। उस समय उन्हें आशंका होने लगती थी कि कहीं बात ही बात में कोई अनर्थ न उपस्थित हो जावे ! आज भी स्टीपेन बहुत उत्तेजित हो रहा था । उसने अपने हाथ बाहर निकाल लिये और जोर-जोर से चिल्लाने लगा, ओह ! मैं कितना बूढ़ा

हो गया हूँ ! देखिये न ! मेरे हाथ अब कितने काँपते हैं ! सचमुच ही बूढ़े के हाथ इस तरह काँप रहे थे मानो जूड़ी का बुखार चढ़ रहा हो ।

देखते हो ! कहता हुआ स्टीपेन अपने पुत्र की ओर मुड़ा । किंतु निकोलस पहले ही खिसक गया था । बातचीत का रंग बदलते देखकर, वह चुपके से बगीचे के बाहर निकल गया था ।

❀ ❀ ❀ ❀

उस दिन निकोलस बहुत रात बीतने पर भी घर नहीं लौटा। उसके मन में, घर जाने की इच्छा ही नहीं होती थी । बहुत देर तक इधर-उधर भटकने के बाद, वह एक मकान के सामने रुक गया और उसकी खिड़की खटखटाने लगा । दीवार की एक दरार से भीतर का प्रकाश छन-छन कर निकल रहा था । निकोलस ने पुकारा, गेवरीलो !

दरवाजा खुला और एक ऊघते हुए व्यक्ति ने झाँककर बाहर देखा ।

गेवरीलो ! मैं भीतर आना चाहता हूँ !

खुशी के साथ आइये ! वह व्यक्ति बोला ।

और कुछ शराब भी......

वाह ! यह तो आपने मन की ही बात कह दी ! कहकर गेवरीलो ने मेज पर एक बोतल रख दी ।

निकोलस बहुत देर तक उस होटल के कमरे में चुपचाप बैठा रहा। उसका सिर हाथों पर टिका हुआ था। सामने वही शराब की बोतल रखी थी......बार-बार उसके मस्तिष्क में यही विचार उठ रहा था, अब मुझे क्या करना चाहिये!

ज्यों-ज्यों वह विचार उत्थित-तरंगित होता, निकोलस के मन में एक उदासीनता छाती जाती थी। होटल के उस निस्तब्ध एकान्त में बैठा हुआ वह बार-बार गुनगुना रहा था; मेरे दोस्तो! मुझे रंज है कि विषाद का कीट मेरे हृदय में बहुत गहरा घुस गया है!

गेवरीलो! एक बोतल और!

बोतल आई और निकोलस पुनः मदिरा पीने लगा। पर अचानक ही उसका रंग न जाने कहाँ विलुप्त हो गया। उसके मानस-पटल पर असंख्य स्मृतियाँ आकर नाचने लगीं। ज्यों-ज्यों वे स्मृतियाँ अधिकाधिक गंभीरता से प्रगट होने लगीं, उसके दिल की कसक भी मिटती गई। वह अपने घर को भी भूलने लगा। अब उसे न होटल की गंदी फर्श ही दिखती थी, न उसकी काली-काली दीवार ही! पास के कमरे से जो बिलियार्ड की आवाज आती थी वह भी अब नहीं सुन पड़ती थी। निकोलस विचार-मग्न हो गया और मानो वह सपना देखने लगा। अचानक उसे अपने मानस-पटल पर कीफ की वही कोलाहलमयी सड़कें और बिजली

से प्रकाशित दूकानें नजर आने लगीं। उसे सुनाई पड़ा, वही संगीत और घंटानाद ! कोलाहल और अट्टहास !

निकोलस का मुख उस स्मृति से प्रकाशित हो उठा और वह मुस्कराता हुआ, पास ही खड़े हुए अर्द्ध-निद्रित गेवरीलो से पूछने लगा, कहो दोस्त ! कभी कीफ गये हो ?

नहीं ! गेवरीलो ने कुछ चौंककर उत्तर दिया, पर वहाँ ऐसे होटल तो पचासों होंगे ?

निकोलस खिलखिलाकर हँस पड़ा और उठ खड़ा हुआ।

अच्छा मित्र ! धन्यवाद ! कहकर उसने अपनी टोपी उठायी और बाहर निकल पड़ा।

रात बहुत बीत चुकी थी। चारों ओर सन्नाटा छा रहा था। ऐसा दिखता था मानो चाँदनी के प्रकाश में लेटकर रात्रि विचार-मग्न हो रही है। इसी समय गाँव के घंटाघर से टन्-टन् की आवाज गूँज उठी। उसकी ध्वनि कितनी विषादपूर्ण थी ! कितनी कर्कश ! बहुत देर तक उसकी प्रतिध्वनि आसपास के वातावरण में गूँजती रही। तब चाँदनी की रजत-किरणों से टकराकर वह न जाने कहाँ विलीन हो गई !

निकोलस धीरे-धीरे अपने घर की ओर अकेला लौट रहा था। सड़क की पटरियों पर उसके जूतों की आवाज गूँज उठती थी। चलते-चलते वह एक जगह रुक गया और ऊँची दृष्टि करके

आकाश की ओर देखने लगा। तारे जगमगा रहे थे! अचानक उसे फ्रांस का प्रसिद्ध क्रांतिकारी गीत 'मारसेयेज' याद आगया और वह चिल्ला-चिल्लाकर उसकी पंक्तियाँ गाने लगा!

पर एकाएक पास के किसी मकान से एक कुत्ता भूँक उठा और निकोलस का गाना बन्द हो गया। फिर से सड़क पर सन्नाटा छागया। सिर्फ उसके चलने की आहट रह-रहकर उस विचार-मग्न रात्रि की निस्तब्धता भंग कर रही थी।

५

उस दिन बहुत रात बीत जाने पर भी निकोलस को नींद न आई। घण्टों तक वह दालान में सोफे पर पड़ा रहा। उसके मन में असंख्य स्मृतियाँ उमड़ने लगीं। उसे अपना विद्यार्थी-जीवन याद हो आया। कीफ में बीते हुए वे दिवस, कितने घटना-पूर्ण थे! बार-बार वे चित्र निकोलस के मानस-पटल पर प्रकट होने लगे। किन्तु उन स्मृतियों में भी एक स्मृति विशेष रूप से उसको बेचैन करने लगी। उस घटना को याद कर, वह एक साथ ही प्रसन्न और उदास होने लगा! वह उसे बेचैनी में डाल देती थी। फिर भी निकोलस उस स्मृति से अपने आपको दूर हटाने में नितान्त असमर्थ था।

उस समय वह कीफ के कारागार में कैद था। दिन पहाड़ की तरह कटते थे। प्रत्येक दिन एक वर्ष की तरह लगता था।

न किसी की आवाज आती थी, न सूरत ही दीख पड़ती थी। रात और दिन वही कालकोठरी और उसकी भद्दी दीवारें! ऐसा लगता मानों वह जिन्दा ही कब्र में दफना दिया गया है।

अचानक एक दिन कोठरी का दरवाजा खुला और जेल-दारोगा ने प्रवेश किया। उसके साथ एक पहरेदार भी था। वह अस्त्र-शस्त्र से पूरी तरह सुसज्जित था। उसकी कमर में तलवार थी और बगल में पिस्तौल!

कोई आपसे मिलने आये हैं! दारोगा बोला।

निकोलस ने अपनी टोपी पहनी और भारी कोट कन्धे पर डाल लिया। दारोगा चला गया था। पर, पहरेदार वहीं खड़ा था। निकोलस उसके पीछे-पीछे चलने लगा। उनका रास्ता एक अँधेरे बरामदे में निकलता था। आस-पास कैदियों की कोठरियाँ थीं। दरवाजों पर सिलसिलेवार नम्बर लगे थे। प्रत्येक पिंजड़े में एक-एक मनुष्य बन्द था। ऐसा लगता था मानो अपने-अपने पिंजड़े में अजायबघर के चिड़ियाखाने का एक-एक पशु कैद है!

कौन आया होगा! निकोलस सोचने लगा, क्या अम्मा? पर, उसे तो मेरी कैद का अभी समाचार ही न मिला होगा! तब कौन हो सकता है! मेरे सहपाठियों का भी आना सम्भव नहीं है। वे या तो कैद हो चुके हैं, या निर्वासित कर दिये गये हैं! और यदि कोई बचा भी हो तो उसे यहाँ कौन आने देगा?

क्यों भाई ! कौन आया है ? निकोलस ने पहरेदार से पूछा ।

महाशय ! हमें कैदियों से बात करने का हुक्म नहीं है । पहरेदार बोला ।

पर, मैं समझता हूँ कि आपने भूल की है ! निकोलस ने कहा, वह व्यक्ति शायद किसी और से मिलने आया होगा !

पहरेदार ने चारों ओर आँखें दौड़ाईं और तब धीरे से कहा, अजी ! तुम्हारी ही भावी पत्नी आई है !

पत्नी ! निकोलस चौंक पड़ा । अचानक उसके पैर चलते-चलते रुक गये और हृदय जोरों के साथ उछलने लगा । उसे दिल खोलकर हँसने की इच्छा हुई ।

चलिये ! रुक क्यों गये ? पहरेदार ने आश्चर्य के साथ कहा ।

पर निकोलस के मन में तो उथल-पुथल मच रहा था । वह जानता था कि सिर्फ अत्यन्त निकट सम्बन्धी ही जेल में मिलने आ सकते हैं । अतएव किसी की प्रेमिका का आना असम्भव नहीं था । किन्तु उसके पास आने वाली कौन हो सकती थी !

उन्होंने मेरी सगाई तो नहीं कर दी है ? अचानक उसके मन में विचार उठ खड़ा हुआ और उसका हृदय और भी तेजी से धड़कने लगा । अचानक ही उसकी आँखें चमक उठीं और ओठ मुसकरा दिये ।

'किन्तु वह कौन होगी, जिसके साथ मेरा सम्बन्ध हुआ है ! पुनः वह अपने-ही-आप पूछने लगा । उसके हृदय में एक अजीब खलबली मच रही थी ।

भावी पत्नी ! वह सोचने लगा, आह ! इस शब्द में कितना सुख भरा है ! कितना आनन्द !! किन्तु वह है कौन ?

वह तेजी के साथ पहरेदार के आगे-आगे चलने लगा। शीघ्र ही दोनों एक छोटे से कमरे में पहुँच गये ।

सामने ही एक दूसरा कमरा था। वह भी ऐसा ही भद्दा और मैला था। पर, दोनों कमरों के बीच दरवाजा नहीं था। वरन् एक खिड़की थी, जिसमें शीशे की जगह पीतल के छड़ों की जाली लगी हुई थी ।

निकोलस ने उसी खिड़की से झाँककर देखा। वासन्ती वस्त्र पहने एक मुग्धा बालिका खड़ी थी !

नमस्कार ! वह मुस्कराकर बोली ।

पास ही एक पुलिस का अफसर खड़ा था। जब कभी वह अपना पाँव हिलाता, उसके अस्त्र-शस्त्र खनखना उठते थे ।

नमस्कार ! निकोलस ने उत्तर दिया और दोनों एक दूसरे की ओर ताकने लगे ।

आप रंजीदा नजर आते हैं ? युवती ने पूछा ।

नहीं; बिलकुल नहीं ! निकोलस ने उत्तर दिया । पर, वह हैरान

हो रहा था। बार-बार वह मन में सोच रहा था, क्या मैंने इसे कहीं देखा है ? पर, वह निर्णय नहीं कर पाता था। कारण यह था कि लड़की के चेहरे पर एक हलके नीले रंग का घूँघट पड़ा हुआ था। इसके अलावा जाली के छड़ों की ओट से उसे स्पष्टतया देखना भी कठिन था।

यदि आप अपना घूँघट खोल सकतीं ! निकोलस ने शरमाते हुए कहा।

जरूर ! कहकर लड़की ने अपना वस्त्र हटा लिया। दो जादूभरी आँखें निकोलस की ओर देखकर चमक उठीं। वह लज्जित होगया और उसके गालों पर एक ललाई दौड़ गई। ओह ! कितना सलोना मुखड़ा है ! निकोलस ने अपने मन में सोचा, ऐसा चेहरा तो मैंने आज तक नहीं देखा था !

इसी समय पास खड़ा हुआ पुलिस-अफसर चौकन्ना होकर देखने लगा। वह बार-बार खाँसता था और अपने हथियारों को खनखनाने लगता था, मानो दिखला रहा हो कि उसे प्रत्येक बात पूरी तरह सुनाई पड़ती है।

आप अपनी गेलिया को तो भूल ही गये ! वह पुनः बोली।

नहीं ! निकोलस ने अटकते हुए कहा। वह मुस्करा रहा था, किंतु उसकी आँखें अब भी नीची ही थीं।

युवती खिलखिलाकर हँस पड़ी। हँसते समय उसकी स्वच्छ

दन्तपंक्ति विद्युत की तरह चमक उठी और आँखें भी एक अद्भुत आलोक से जगमगा उठीं।

पुनः पुलिस अफसर की खन्-खन् सुनायी पड़ी। कृपया इतना शोर न मचाइये! वह बोला।

लीजिये जनाब! यह तो आप खूब कहते हैं! क्या यहाँ हँसने की भी इजाजत नहीं है? लड़की ने चपलता के साथ पूछा।

जी हाँ! जोर से हँसने की इजाजत नहीं है!

और रोने की? लड़की ने फिर पूछा।

यहाँ न तो हँसने की आवश्यकता है, न रोने की! पुलिस-अफसर ने उत्तर दिया।

जब दोनों चुप हो गये, निकोलस ने पुनः युवती की ओर मुड़कर पूछा, आजकल बाहर मौसिम तो बहुत सुहावना होगा?

जी हाँ! आजकल फूलों की तो ऐसी बहार है कि सारा वायुमंडल ही महकता रहता है—वह कहने लगी, और तारे भी इतने तेज चमकते हैं और बड़े नजर आते हैं मानो पृथ्वी के समीप आगये हों! दूसरी बार जब मैं आऊँगी तब आपके लिए कुछ फूल लाऊँगी। कहिये, आपको कौन-सा फूल सबसे अधिक पसन्द है?

जो भी आप ले आवें! निकोलस लजाता हुआ बोला, मैं उन्हें अपनी कोठरी में रखूँगा और वे मुझे आपकी याद दिलाते

रहेंगे ! उसने लड़की के मुख की ओर देखा। पुनः आँखों से आँखें मिल गईं और वह शरमा गया। उसके गालों पर एक सुर्खी फैल गई।

आप रंज न करें वह बोली, मैं प्रत्येक शनीचर को आप से मिलने आया करूँगी !

दोनों ने एक दूसरे की ओर देखा और अपनी आँखें नीची कर लीं ! उसी समय जेल की घड़ी ने टन्-टन् कर दो बजा दिये !

पहरेदार ने दरवाजा खोल दिया और कहा, चलिये ! समय हो गया है !

अच्छा ! प्रणाम। गेलिआ ने अत्यन्त प्यार भरे नेत्रों से देख कर कहा, रंज न करें ! चाहे जहाँ रहें स्मरण रखियेगा कि आप मित्र-विहीन नहीं हैं......

निकोलस ने उत्तर में मुस्करा दिया। किंतु उसकी मुस्कान में एक वेदना अंतर्हित थी। आँखों में आँसू की बूँदे छलक रही थीं। हृदय गद्‌गद् हो रहा था। अचानक ही उसके दिल में आनन्द का इतना प्रबल ज्वार उमड़ आया कि उसे जी भरकर रोने की इच्छा हुई।

दरवाजा बन्द हो गया। पुनः वही काल कोठरी ! वही सन्नाटा !! एकाएक निकोलस के मन में गाने की इच्छा उत्पन्न हुई और वह ऊँचे राग में किसी पुराने रूसी गीत की पंक्तियाँ अला-

पने लगा। गीत की पहली पंक्ति थी—"अब मैं तुम्हारे ही साथ जलूँगा ! तुम्हें प्यार करूँगा !!......

यहाँ नाचने-गाने की अनुमति नहीं है ! सहसा किसी की कर्कश आवाज आई। ऐसा प्रतीत हुआ मानो दरवाजा ही मनुष्य के स्वर में बोल उठा हो !

और प्यार करने की ? निकोलस ने गाना बन्द कर पूछा।

किंतु कोई उत्तर न मिला।

उस दिन निकोलस के हृदय में आनन्द की लहरें इतने प्रबल वेग से उमड़ने लगीं कि कुछ समय के लिए वह अपने बन्धन को प्रायः भूल ही गया। हर्ष के मारे वह दिन भर लड़कों की तरह उछलता-कूदता रहा। कभी वह पशु की तरह सिर उठाकर कोठरी में दौड़ने लगता था। कभी मुट्ठियाँ बाँधकर दीवारों की ओर लपकने लगता था। एक बार तो उसने उछल-उछलकर नाचने की भी कोशिश की थी !

वाह ! यह तो इस तरह कूद रहा है मानो आज ही इसकी सालगिरह का दिन है ! पहरेदार ने दरवाजे के छेद से झाँककर अपने मन में कहा। सचमुच ही निकोलस के हृदय में आज अपरिमित आनन्द का ज्वार उमड़ पड़ा था !

इसी तरह नाचते-कूदते सन्ध्या आ गयी। शनिवार का दिन था। अतएव गिरजे की घंटियाँ बजने लगीं। उनकी मधुर

ध्वनि से सारा वातावरण गूँज उठा। सहसा निकोलस के हृदय का ज्वार ठण्डा पड़ गया और उसका मस्तिष्क विचारों में डूब गया। उसे अपने बचपन की स्मृतियाँ याद हो आईं। हृदय में एक अशांति छाने लगी और चित्त उदास हो गया! उसने कोठरी की खिड़की खोल दी। आकाश स्वच्छ और नीला था। सूर्य डूब रहा था। जेल की दीवारें सन्ध्या की रक्तिम किरणों से प्रकाशित होकर लाल-लाल दृष्टिगत होती थीं। समीप ही कुछ कबूतर स्वच्छन्दता के साथ विहार कर रहे थे। निकोलस खिड़की से सूर्यास्त का दृश्य देखने लगा! उसका चित्त और भी अधिक उदास हो गया। हृदय में एक पीड़ा उठने लगी। स्वतंत्र वातावरण में विचरने वाले उन पक्षियों को देखकर उसे अपनी आजादी याद आगयी!

अँधेरा प्रगाढ़ हो गया। वसन्त की सुहावनी रात थी। एक उज्ज्वल नक्षत्र खिड़की के सामने जगमगा रहा था। पास ही किसी के गाने की ध्वनि सुनायी पड़ती थी। शायद दारोगा के बँगले पर ही कोई गा रहा था। बीच-बीच में एक बुलबुल भी जेल की दीवारों के समीप अलापने लगती थी। निकोलस का दिल भारी होने लगा। भीतर-ही-भीतर एक अजीब सूनापन उसके जी पर छाने लगा। वह समझ नहीं सकता था कि उसके असन्तोष का कारण क्या था! रह-रहकर उसके मन में यही विचार उठ रहा था, यह मनमोहिनी गेलिआ कौन है?.....

एकाएक उसे कविता करने की सूझी ! वह उठा और एक जली हुई दियासलाई लेकर दीवार पर लिखने लगा। पर, इसी समय किसी के अट्टहास की ध्वनि सुनाई दी। शीघ्र ही निकोलस ने वे पंक्तियाँ बाँह से रगड़ कर मिटा डालीं। किन्तु उसके मन में अब भी वही प्रश्न उठ रहा था—यह अलबेली गेलिआ कौन है ?

पूरे सप्ताह भर वह इसी तरह बेचैन रहा। अगले शनिवार के दिन गेलिआ पुनः आनेवाली थी। निकोलस अब रात-दिन उसी घड़ी की प्रतीक्षा करने लगा, जब वह फिर अपनी अपरिचिता प्रेमिका को देख सकेगा। हर मिनट, निकोलस अगले शनिवार के आने की बाट जोहता रहता था। उसे रात को नींद भी नहीं आती थी। शनिवार के आने में कितने दिन बाकी हैं ! इसी प्रश्न को सुलझाने में उसका मस्तिष्क रात दिन व्यस्त रहता था।

आखिर वह शनिवार आया और निकोलस का दिल बाँसों उछलने लगा। उस दिन मौसिम खराब था। आकाश में बादल छा रहे थे। कुछ-कुछ बरसात भी हो रही थी। पर, निकोलस को इसका पता भी न था। वह तो अपनी कोठरी में आज इस तरह एकाग्र होकर बैठा था, मानो पहरा दे रहा हो ! उसकी आँखें दरवाजे की ओर टकटकी बाँधे स्थिर थीं, जरा-सी खड़-खड़ाहट होने पर भी वह चौंक उठता था।

सहसा दरवाजा खुला और पहरेदार ने भोजन की थाली लेकर प्रवेश किया।

कोई मिलने वाला आया है? निकोलस ने उत्सुकता के साथ पूछा।

पर, उसे कोई उत्तर न मिला। उसने भोजन को छुआ भी नहीं। उसकी दृष्टि अब भी दरवाजे की ओर ही एकाग्र थी। कान प्रत्येक आवाज को सुनने का प्रयत्न कर रहे थे। बहुत देर तक वह इसी तरह प्रतीक्षा करता रहा। आखिरकार बेचैन होकर उसने किवाड़ खटखटाया और पहरेदार को पुकार कर पुनः पूछा, कोई आया?

पर, इस बार भी कोई उत्तर न मिला।

सन्ध्या आ गयी। जेल के कैदी सायंकाल की प्रार्थना के गीत गाने लगे। निकोलस निराश हो गया। अब उसे गेलिआ के आने की आशा न थी। इसी समय जेल का दारोगा, कैदियों का निरीक्षण करता हुआ निकोलस की कोठरी के समीप आया। दरवाजा खोल दिया गया और निकोलस के सामने कुछ मुरझाये हुए फूल रख दिये गये।

निकोलस के गालों पर एक लालिमा छा गयी। उसका शरीर पसीने-पसीने हो गया। एक काँपती हुई आवाज से उसने पूछा, और मुझसे मिलने वाला व्यक्ति?

पर, उसे उत्तर न मिला। दारोगा मुस्कराया और बाहर चला गया। जब दरवाजा बन्द हो गया, तो निकोलस ने उसकी आवाज सुनी, यहाँ तो सभी किसी-न-किसी के प्रेम में बँधे हैं।

निकोलस ने उन फूलों की पँखुड़ियों में अपना मुँह छिपा लिया। मुरझा जाने पर भी, वे पुष्प एक भीनी सौरभ से सुवासित हो रहे थे। निकोलस को तो वे और भी अधिक प्रिय लगे; क्योंकि कुछ ही समय पूर्व वे फूल गेलिआ के हाथों में रहे होंगे।

उन फूलों को निकोलस बहुत सावधानी के साथ रखने लगा। वह उनकी इस तरह हिफाजत रखता था, जैसे माँ अपने बच्चों की रक्षा करती है। किन्तु वे पुष्प अधिक दिनों तक जीवित नहीं रह सके। शीघ्र ही मृत्यु ने उन्हें झुलसा दिया और वे काले पड़ कर नष्ट हो गये। सिर्फ एक सूखा फूल ही बच रहा। निकोलस ने उसे एक डायरी में रख दिया। जब कभी वह उस डायरी को खोलता, उसकी दृष्टि उस मुरझाये पुष्प पर टिक जाती और पुनः वही प्रश्न उसके मस्तिष्क में उठ खड़ा होता था, आह यह मुग्धा गेलिआ कौन है?

६

दूसरे दिन सुबह कमरे में एक अजीब गुनगुनाहट सुनकर निकोलस की नींद टूट गई। ऐसा मालूम हुआ मानो सारा घर

ही उस धीमी आवाज से गूँज रहा है। निकोलस ने तुरन्त उस स्वर को पहचान लिया। यह उसके पिता की आवाज थी। वह अपनी प्रातःकाल की प्रार्थना कर रहा था। बीच-बीच में बूढ़े के घुटनों की हड्डियाँ भी कड़कड़ा उठती थीं। अपने सम्बन्धियों और मित्रों के लिए प्रार्थना कर चुकने पर वह उठा और अपना पायजामा झाड़ता हुआ गुनगुनाया, यद्यपि वह गलत राह पर है, फिर भी उसे अपना दास समझ कर क्षमा करें।

प्रार्थना के बाद स्टीपेन निकोलस को जगाता हुआ बोला, उठो, आज तुम्हें कोतवाली जाना है।

अच्छा, निकोलस ने उत्तर दिया।

अच्छा ही नहीं। उठकर शीघ्र हाथ-मुँह धो लो और प्रार्थना से निपट लो। आज तुम्हें अवश्य पुलिस-अफसर के पास जाना होगा।

बूढ़े ने परदा हटा कर खिड़की खोल दी। प्रातःकाल की निर्मल वायु, सूर्य की किरणें और पक्षियों के मधुरालाप की ध्वनि, एक साथ ही कमरे में आ घुसीं। समीप ही मेरिया का स्वर भी सुनाई पड़ता था। वह बरतन मलती हुई उन मुर्गियों को ललकार रही थी, जो गिलासों की खड़खड़ाहट सुनकर उसके चारों ओर इकट्ठी हो गयी थीं। निकोलस बहुत देर तक उसी तरह बिस्तरे पर पड़ा-पड़ा बारंबार गेलिया को याद कर रहा था।

हमेशा की तरह अपनी फूलदार टोपी और सफेद पोशाक पहनकर वह पुनः स्वप्न में आयी थी और उसके कानों में कुछ कहने लगी थी। पर उसने क्या कहा, यह निकोलस को याद नहीं आ रहा था।

कोलिआ उठो, मेरिया ने खिड़की से झाँककर कहा, आज तुम्हें कोतवाली जाना है।

निकोलस की विचार-धारा भंग हो गयी। उसके शरीर में एक तरह की कँपकँपी फैल गयी और गेलिआ के सम्बन्ध में उठनेवाले विचार सहसा इस तरह उड़ गये—जैसे मेरिया की आवाज सुनकर बकायन की झाड़ी पर बैठे हुए पत्ती चौंककर उड़ गये थे।

सुना कि नहीं? वह फिर बोली, आज तुम्हें पुलिस के दफ्तर में जाना होगा।

मैं बहरा तो हूँ नहीं! निकोलस ने चिढ़कर उत्तर दिया। कुछ दिनों से वह पुलिस शब्द को सुनते ही उत्तेजित हो उठता था। बार-बार अपने माता-पिता के मुँह से पुलिस, दारोगा, धर्म-पिता इत्यादि शब्द सुनकर उसके मन में क्रोध उत्पन्न होने लगता था।

वह उठा और जल्दी-जल्दी हाथ मुँह धोकर वस्त्र पहनने लगा। बाल भी उसने इतनी घबड़ाहट के साथ सँवारे कि कई केश कंघे से उलझ कर उखड़ पड़े। तब वह बाहर बगीचे में गया, जहाँ चाय तैयार हो रही थी। मेरिया ने चाय का गिलास सामने रखा। वह आज निकोलस की ओर विशेष ध्यान दे रही

थी। उसका कोतवाली जाना, बुढ़िया के लिए एक अत्यन्त महत्वपूर्ण बात थी। बुढ़िया कुछ-कुछ भयभीत थी। पर, साथ ही उसके मन में एक तरह की आशा भी बँध रही थी। वह बार-बार अपने मन में निकोलस के लिए दुआ मना रही थी और उसकी ओर ऐसी कातर दृष्टि से देख रही थी, मानो वह किसी खतरनाक काम के लिए जा रहा हो।

स्टीपेन ने अपने पुत्र की ओर देखा ही नहीं। वह बीच-बीच में गुर्राता रहा और मेज पर बिखरे हुए रोटी के टुकड़े चुन-चुनकर अपनी तश्तरी में बटोरता रहा। निकोलस यह देखकर मन-ही-मन बेचैन होने लगा। उसे ऐसा मालूम हुआ मानो उसका पिता अपनी मितव्ययिता दिखलाकर उसकी बेकसी की ओर संकेत कर रहा है! निकोलस को यह बात इतनी अधिक चुभ गई कि उसने चाय के प्याले को छुआ भी नहीं।

जरा अपने बाल तो ठीक तौर से सँवार लो! बूढ़े ने अपने आफिस के लिए रवाना होते हुए कहा, तुम्हें नायब-दारोगा से बात-चीत करनी होगी। मेहरबानी करके तनिक सभ्यता के साथ पेश आना। अपने उद्दण्ड व्यवहार से उन लोगों के साथ मेरी मित्रता पर, कहीं धब्बा न लगा बैठना!

स्टीपेन के चले जाने पर मेरिया अपने पुत्र के साथ खुलकर बात करने लगी।

कल रात को कहाँ चले गये थे बेटा ? माँ ने पूछा, हम लोग तो बाट जोहते-जोहते थक गये । कुछ समझ ही नहीं पाये कि क्या बात हो गई थी ? बल्कि हम तो भयभीत होकर कोत-वाली भी तलाश आये !

निकोलस के चेहरे पर एक सुर्खी दौड़ गई । उसे कुछ क्रोध हो आया और उसने खाना बन्द कर दिया ।

दिन रात कोतवाली और पुलिस ! वह चिढ़ कर बोला, क्या मुझे खाते समय भी चैन न लेने दोगी ? तुम तो पुलिस की बात कहे बिना मुझे चाय भी नहीं पीने देतीं !

पर, कोलिआ ! हमें चिन्ता होने लगती है । बुढ़िया घबड़ा-कर कहने लगी, तुम हमें सिपुर्द किये गये हो । तुम्हारे पिता तुम्हारे लिए जिम्मेदार हैं । उन पर किसी तरह की आफत आना क्या ठीक होगा ?

अच्छा ! अच्छा ! मैं अब कहीं भी न जाऊँगा । निकोलस ने उस अप्रिय वार्तालाप को समाप्त करने की इच्छा से कहा, और ऐसा कोई स्थान भी नहीं है कि जहाँ मैं भाग जाऊँ । अत-एव तुम लोग घबड़ाओ मत !

भाई ! तुम जानते ही हो कि अधिकारियों ने तुम्हारे बाबा से एक जवाबदेही का कागज लिखवाया है । तुम अधिक समय तक गायब मत रहा करो !

अच्छी बात है !

देखो न ! कल संध्या समय ही केलिआजिन ने तुम्हें बुला भेजा था। कहते हैं, तुम्हारे बारे में कुछ रिपोर्ट आई है। किसी पत्र-व्यवहार का पता लगा है !

निकोलस कुछ भी नहीं बोला। तब मेरिया केलिआजिन के बारे में विस्तारपूर्वक चर्चा करने लगी।

देखो ! उसने अपना अध्ययन समाप्त कर लिया। अच्छा पद भी पा लिया। शादी भी कर ली। बहू भी कितनी अच्छी मिली है ! मेरिया ने एक आह भरकर कहा और एक रञ्जीदा निगाह से अपने पुत्र की ओर देखा।

मुझे भी एक बहू मिल गई है ! निकोलस ने व्यंग के साथ मुसकराते हुए कहा।

अच्छा ! मेरिया ने उसकी बातपर विश्वास न किया और पूछा, कौन है वह ?

मैं नहीं जानता !

वाह ! यह तो खूब कहते हो ! अच्छा यह तो बताओ, वह किसी अमीर खानदान की है या साधारण घराने की ?

यह भी मुझे मालूम नहीं !

उसका नाम ?

कह नहीं सकता।

मेरिया यह उत्तर सुनकर हँसने लगी।

यों तो दुनिया में हजारों सुन्दरी युवतियाँ पड़ी हैं, बुढ़िया बोली, पर अब इस दशा में उनमें से कोई भी तुम्हें अपनाने को राजी न होगी!

सम्भव है! निकोलस ने कहा, किन्तु वह लड़की तो खुशी-खुशी मुझसे शादी कर लेगी।

तब तो वह बहुत साहसी होगी! बुढ़िया बोली, किन्तु• कोलिआ! तूने अपने सुख के सब मौके बर्बाद कर डाले! आह! यदि आज तू भी पढ़-लिखकर कहीं अच्छा पद पाता! तब घर में सुन्दर बहू आती! और......

माँ! तुम तो हमेशा रो-रोकर मुझे कमजोर बना देती हो! निकोलस मक्खियाँ उड़ाता हुआ, बोला।

बेटा नाराज मत हो! क्या मैं झूठ कह रही रही हूँ? आह! मेरा जी, तुझे उदास देखकर कितना तड़पता रहता है! माँ की आँखों में आँसू छलकने लगे।

माँ क्यों निरर्थक रंज करती हो! मैं जो कुछ भी कर रहा हूँ, अपने निश्चित सिद्धान्त के अनुसार ही करता हूँ। उस पथ से मैं नहीं डिग सकता।

निकोलस उठा और कोतवाली की ओर रवाना हुआ। बुढ़िया फाटक तक उसके साथ-साथ आई। जब निकोलस जाने

लगा, उसकी माता ने चुपके से सलीब का पवित्र आकार बनाकर मंद स्वर में कहा, परमात्मा तुम्हें सहायता दे !

❀ ❀ ❀ ❀

गाँव के गिरजाघर के सामने पीले रंग की एक पुरानी इमारत थी। उसकी छत पर एक बदसूरत मीनार थी। नीचे लंबा-चौड़ा बरामदा था, जहाँ अधिकतर ग्रामीण स्त्री-पुरुषों की एक भीड़ नजर आया करती थी। जब निकोलस ने वह मैली इमारत देखी, सहसा उसे अपने पिता के लंबे-लंबे भाषण और माता के आँसू याद आ गये ! इस काले-काले मकान को देखकर उसे अपने धर्म-पिता का भी स्मरण हो आया और उसके दिल में पुनः खलबली मचने लगी। वह मकान उसे खतरनाक और प्राणघातक इमारतों-जैसा नजर आया, जिनका किस्सा उसने बचपन में किसी डरावनी कहानी में पढ़ा था।

जब निकोलस उस मकान के बरामदे में पहुँचा, वहाँ बैठे हुए किसान उसकी भड़कीली पोशाक देखकर अदब के साथ उठ खड़े हुए। पुरुषों ने अपनी टोपियाँ उतार लीं और स्त्रियों ने सिर झुका दिये। एक किसान धीमी आवाज़ से बोल उठा, हे दीनबन्धु ! उस शब्द में कितना विनय भरा पड़ा था ! कितनी वेदना अंतर्हित थी !!

निकोलस आगे बढ़ा। सीढ़ियों के आस-पास भी ग्रामीण

लोगों की भीड़ जमा थी। फर्श पर कुछ औरतें बैठी थीं। समीप ही एक चपरासी अपनी मूँछे ऐंठता हुआ युवतियों से मजाक कर रहा था। वहाँ एक तरह की बदबू फैल रही थी। ऐसा मालूम होता था, मानो कई चूहे मर गये हों !

निकोलस ने उन लोगों से वहाँ बैठने का कारण पूछा। तत्काल पचीसों आदमी एक स्वर में बोल उठे, हम गवाही देने आये हैं भैया ! वे सब इस तरह उल्लास के साथ चिल्ला उठे, मानो उन्हें उम्मीद हो कि चमकीले बटनवाला यह व्यक्ति शायद उनकी कुछ मदद कर सकेगा !

सीढ़ियाँ चढ़कर निकोलस ऊपर पहुँचा। सामने ही एक चपरासी खड़ा था। उसने समीप आकर पूछा कहिये ! क्या काम है ? निकोलस का उत्तर पाने पर चपरासी उसे एक छोटे कमरे में ले गया और उसे वहाँ बिठाकर बाहर चला गया। निकोलस वहाँ बहुत देर तक बैठा रहा। कमरे में चारों ओर से मकान के कोलाहल की आवाज आ रही थी। कहीं कागज फड़फड़ा रहे थे। कहीं कलमें तेजी के साथ चल रहीं थीं। बीच-बीच में सीढ़ियों पर किसी के पैरों की आहट सुनायी पड़ती थी। निकोलस इस भगदड़ को सुनते-सुनते अलसाने लगा। उसका दिल भारी होने लगा। उसे सोने की इच्छा हुई ! धीरे-धीरे उसके शरीर में एक ऐसी सुस्ती फैलने लगी, मानो वह जड़वत् हुआ जा रहा हो !

उसका मस्तिष्क शून्य होने लगा। विचार मंद पड़ गये और बोलने की शक्ति भी मानो क्षीण हो गई। बहुत देर तक निकोलस इसी तरह अर्द्ध-निद्रावस्था में पड़ा रहा। तब अचानक उसे किसी की आवाज सुनायी दी, चलिये !

निकोलस ने आँखें खोलीं। वही चपरासी उसकी बाँह पकड़ कर साथ आने का संकेत कर रहा था। निकोलस उठ खड़ा हुआ; पर आगे जल्दी-जल्दी नहीं बढ़ सका। उसके मस्तिष्क में चक्कर आ रहे थे और एक पाँव शून्य हो रहा था।

क्यों ! क्या हो गया है ? चपरासी ने पूछा।

निकोलस ने कुछ भी उत्तर नहीं दिया और चपरासी द्वारा बताये गये एक दरवाजे की ओर कदम बढ़ाया। दरवाजे के भीतर एक बड़ा-सा कमरा था, जिसमें बहुत से आदमी अपनी-अपनी मेज के सामने बैठे हुए लिखने में व्यस्त थे। एक टेबल अन्य मेजों की अपेक्षा अधिक सजी हुई नजर आती थी और उसके सामने बैठा हुआ व्यक्ति भी अन्य लोगों की अपेक्षा ऊँचा पदाधिकारी प्रतीत होता था। शायद वही आफिस का सेक्रेटरी था। निकोलस ने उसके समीप जाकर पूछा, क्या आप ही इस दफ्तर के सेक्रेटरी हैं ?

जी हाँ ! उसने गर्व के साथ उत्तर दिया, आइये ! बैठिये। आप, महाशय स्टीपेन के पुत्र हैं न ?

जी हाँ !

आज आपको देखकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई, सेक्रेटरी कहने लगा, मैं समझता हूँ आप आजकल अपने माता-पिता की सिपुर्दगी में हैं ? स्टीपेन मेरे घनिष्ठ मित्र हैं। अच्छा, क्या आप इन शर्त्तों को पढ़कर दस्तखत करने की कृपा करेंगे ? यह केवल जाब्ते की कार्रवाई है ! उसने मुसकराते हुए एक कागज निकोलस के हाथ में दिया।

निकोलस उन शर्तों को पढ़ने लगा।

तुम्हें गाँव के बाहर जाने की इजाजत नहीं। किसी को पढ़ाने की इजाजत नहीं। विभिन्न संस्थाओं में भाग लेने की इजाजत नहीं। नाटक खेलने की इजाजत नहीं......इस तरह कई शर्तें लिखी हुई थीं और सबके आगे इजाजत नहीं जुड़ा हुआ था।

यह बातें कागज पर ही भयंकर मालूम पड़ती हैं ! सेक्रेटरी ने निकोलस की घबड़ाहट दूर करने के इरादे से कहा, यों तो हमारे जीवन में इनसे भी अधिक भयावनी बातें होती रहती हैं ! उसने एक कलम निकोलस की ओर बढ़ाई। निकोलस ने तुरन्त अपने दस्तखत कर दिये। सेक्रेटरी ने कागज पर सोख्ता चिपकाकर संतोष की एक दीर्घ निःश्वास खींची और कहा, बस !

निकोलस को अपने पीछे कुछ कानाफूसी सुनायी दी। घूमने पर उसने देखा कि कमरे के अन्य सभी लोग उसकी ओर आश्चर्य और उत्सुकतापूर्वक देख रहे हैं।

मैं समझता हूँ हमारे दारोगा साहब आपके धर्म-पिता हैं ? आप उनसे मिलने गये थे ? सेक्रेटरी ने पूछा।

नहीं।

आपको अपने धर्म-पिता से अनुरोध करना चाहिये कि वे पुलिस के आदमियों को आपके मकान पर जाने से रोक दें। मेरी राय में तो यदि आप सप्ताह में एक बार यहाँ आया करें तो बेहतर होगा। हम लोग यहाँ बैठकर कुछ गपशप कर सकेंगे। साथ ही जाब्ता भी पूरा हो जावेगा।

निकोलस को वहाँ बैठे-बैठे ऐसी घबड़ाहट मालूम पड़ने लगी मानो उसका गला घुटा जा रहा हो। उसे वह गंदा कमरा बहुत बुरा लग रहा था और वह बाहर की स्वच्छ हवा में जाना चाहता था। किंतु इसी समय एक वर्दी-धारी व्यक्ति उसके समीप आया और बोला, नायाब दारोगा साहब ने हुक्म फरमाया है कि आप जाने के पहले उनसे मिल लें !

निकोलस का चेहरा हुक्म शब्द सुनकर कुछ लाल हो गया।

वे मुझसे क्या चाहते हैं ? वह बोला।

उन्होंने जो हुक्म दिया है; वह मैंने कह दिया। इससे अधिक मैं कुछ नहीं जानता !

भाई ! तुम्हें जाना ही होगा ! सेक्रेटरी ने निकोलस के कान में कहा, यही कानून है !

निकोलस ने एक सिगरेट जला ली और रोष पूर्वक कदम रखता हुआ उस आदमी के पीछे जाने लगा। वे एक बरामदे में होकर निकले, जहाँ वही बदबू फिर आने लगी, जो नीचे के बरामदे में फैली हुई थी।

यहाँ चूहे बहुत हो गये हैं वरदी वाला आदमी कहने लगा, पार साल वे एक बहुत जरूरी मिसिल खा गये। कागज कुछ-कुछ चरबी-जैसे बासते थे, इसलिए चूहों ने सिवा ऊपर के पन्ने के और कुछ भी नहीं छोड़ा।

तब तो तुम्हारी मिसिलें बड़ी स्वादिष्ट हैं। निकोलस ने व्यंग के साथ कहा।

वे अब एक बड़े कमरे में आ गये थे। कमरे के मध्य में एक लंबी मेज पड़ी थी और उस पर जरीनी काम किया हुआ एक लाल कपड़ा बिछा हुआ था।

अच्छा, अब आप अपनी सिगरेट फेंक दीजिये। नौकर ने कहा।

मैं अभी उसे समाप्त कर देता हूँ, कहकर निकोलस ने जोर से एक फूँक खींची और नाक से सब धुँआ छोड़ दिया।

नहीं, नहीं, यह बात ठीक नहीं है। यहाँ इसकी इजाजत नहीं है। नौकर बिगड़ कर बोला और अपने रूमाल से कमरे में फैले हुए धुँए को बिखेरने लगा।

इसी बीच निकोलस ने सिगरेट का बचा हुआ टुकड़ा फर्श पर फेंक दिया। नौकर ने तत्काल लपक कर उसे उठा लिया। पर, वह उसे फेंकने का कोई उपयुक्त स्थान न पा सका। अतएव वह टुकड़ा अपने कोट के पाकिट में ही डाल लिया।

सामने एक दरवाजा था। नौकर धीमे कदम रखता हुआ अब उसी के निकट गया और डरते-डरते किवाड़ खोलकर बोला, हजूर! वे आ गये हैं।

अच्छा उन्हें भीतर आने को कहो। किसी की रूखी आवाज सुनायी दी।

जनाब! नौकर ने निकोलस की ओर मुड़कर कहा और दरवाजे की ओर संकेत किया।

निकोलस ने कमरे में प्रवेश किया। एक मेज के सामने नायब-दारोगा बैठा था और कुछ-कुछ गुनगुनाता हुआ सामने पड़े हुए कागज उलट रहा था। उसने चुपचाप, निकोलस को कुर्सी पर बैठने का इशारा किया और उसी तरह अपने कागजात पढ़ता रहा। निकोलस क्रोध-भरी दृष्टि से उसकी ओर देखने लगा। आखिर वह गुनगुनाना बंद हुआ। नायब दारोगा ने अपने हाथ की मिसिलें एक ओर रख दीं और अपनी मूँछें ऐंठता हुआ बोला, आपही स्टीपेन के लड़के हैं?

जी हाँ।

ओह ! आप किस बेहूदे झंझट में फँस गये उसने कहा और उठकर दरवाजा बंद कर दिया। निकोलस चुपचाप बैठा रहा।

क्यों भाई ! तुम लोग चाहते क्या हो ? वह फिर कहने लगा, क्या समानता ? पर, मेरे नौजवान दोस्त ! समानता के सपने देखना निरर्थक है। यही देखो ! तुम कितने दुबले-पतले हो, जब कि मैं मोटा और मजबूत हूँ। दुनिया में भिन्न-भिन्न प्रकृति के लोग हैं। कोई तरबूज पसन्द करता है, कोई उससे नफरत करता है। फिर समानता कैसे संभव है ? और स्वयं प्रकृति ही समानता नहीं चाहती ! मैं तो कहूँगा कि तुम्हें उन लोगों की बातें भी न सुननी चाहिये थीं, जो समानता का प्रश्न उठाकर भोले-भाले नवयुवकों को उत्तेजित किया करते हैं। नहीं, नहीं, दुनिया में न तो आज ही समानता है न भविष्य में ही होगी। मैं तुम्हें यह बातें पुलिस-अफसर की हैसियत से नहीं कह रहा हूँ, वरन् तुम्हारे एक शुभचिंतक की तरह कहता हूँ। मैं तुम्हारे पिता को बहुत चाहता हूँ। क्या तुम समझते हो कि हम लोगों ने अभी समानता के स्वप्न देखे ही न होंगे ? नहीं, जवानी के जोश में सभी लोग ऐसे सपने देखा करते हैं। किंतु एक समय आता है, जब अपनी मूर्खता मालूम होती है......... खैर ! तुम निराश क्यों होते हो ? अब भी सब कुछ सुलझाया जा सकता है.........

क्षमा करें। मेरे पास फालतू समय नहीं है। कहकर निकोलस उठ खड़ा हुआ और कमरे के बाहर चला आया। उसका चेहरा पीला पड़ रहा था। हाथ काँप रहे थे। आँखें एक ग्लानि-युक्त दृष्टि से ताक रही थीं।

७

बगीचा बकायन के श्वेत और गुलाबी फूलों से विभूषित था। प्रातःकाल ही से पक्षियों का मधुर कलरव गूँजने लगता था। पास के बगीचे में, नीबू के पेड़ों पर बैठकर बुलबुल अपने गीत गाया करती थी। वह छोटा-सा घर हरियाली से इतना अधिक आच्छादित था कि छत पर भी घास के गुच्छे उग आये थे। अब दिन में गरमी अधिक मालूम पड़ती, अतएव पानी देखकर, नहाने और तैरने की इच्छा होती। निकोलस बन्दूक लेकर अब अधिकतर नदी के किनारे ही विचरता रहता था। वह स्टीपेन के तानों से ऊब गया था। बूढ़ा दिन-रात पैसे की तंगी, अथवा निकोलस की बेकारी और लापरवाही के सम्बन्ध में ही बड़-बड़ाता रहता था। अतएव निकोलस अब जानबूझकर अपने माता-पिता से दूर रहने का प्रयत्न करने लगा।

नदी के उस पार चरागाहों से घिरा हुआ एक प्रशान्त सरो-वर था। हरित तरु-लताओं से परिवेष्टित वह निर्मल सरोवर ऐसा प्रतीत होता था; मानो प्रकृति देवी का उज्ज्वल दर्पण हो।

आकाश में विचरते हुए रेशमी बादल उस प्रकृति-मुकुर में झाँक-झाँककर अपना सौन्दर्य देखा करते थे। जब प्रातःकालीन मलयानिल के मधुर झकोरे से उस सरोवर का निर्मल जल हिलोरें लेने लगता, तब उसमें प्रतिबिम्बित नील-नीरदों से युक्त गगन-मण्डल ऐसा झिलमिल-झिलमिल करता था, मानो प्रकृति की निरुपम शोभा का निरीक्षण कर नृत्य कर रहा हो।

उपवन के ऐसे एकान्त कोने में प्रकृति की गोदी में लेटकर फूलों की लोरियाँ सुनने से अधिक सुखप्रद और क्या हो सकता है। निकोलस घंटों तक उस तालाब के किनारे हरी-हरी दूब पर लेटा रहता था। उस समय वह एक असीम शान्ति का अनुभव करने लगता था। चित्त की सारी उदासीनता दूर हो जाती और उसके हृदय में यौवनकालीन उल्लास उसी तरह झलकने लगता था जिस तरह उस सरोवर में आकाश का निर्मल प्रतिबिम्ब। तब उसके मन की समग्र व्यथाएँ कुछ देर के लिए विलुप्त हो जातीं और हृदय में जीवन का सच्चा आनन्द तरंगित होने लगता था।

कभी-कभी कोई जल-कुक्कुट तैरता हुआ किनारे आ जाता और पानी में झुकी हुई बेतों की परिक्रमा करता हुआ अपने साथियों को पुकारने लगता था। उस समय निकोलस चाहता तो सरलता से उसका शिकार कर सकता था। पर, वह अपनी

बन्दूक को न छूता था। वह एकाग्र होकर आसपास की शोभा देखने में ही तल्लीन रहता था। उस समय उसके हृदय में ऐसा भाव तरंगित होने लगता, मानो वह प्रकृति के अत्यन्त निगूढ़-रहस्यों का पता पा गया हो। तब उसे न तो अपने घर की स्मृति रहती, न लोगों की निन्दा ही याद आती। वह अपने भावना-लोक के गम्भीर और शान्त वातावरण में ही विचरता रहता और सुख के उज्ज्वल सपने देखा करता था।

कुछ दिनों से निकोलस पर निन्दा और अपवाद की बौछार अधिक क्रूरता के साथ पड़ने लगी थी। लोग उसे रास्ते चलते-चलते टोकने लगते थे। घर पर भी उसे चैन न था। उसकी माँ तो केवल निश्वास खींचकर ही रह जाती थी, पर स्टीपेन जब कभी उसे देखता, कुछ कटु शब्द कहे बिना नहीं रहता था। यदि निकोलस कभी बगीचे में बैठकर पुस्तक पढ़ता, तो स्टीपेन कहने लगता, अब पढ़ने से क्या लाभ ? यदि वह निष्क्रिय होकर इधर-उधर टहलने लगता तो उसका पिता कटु व्यंग के शब्दों में कहता, वाह ! इससे अधिक मजेदार जीवन और क्या हो सकता है। खाने-पीने को पर्याप्त हो और काम कुछ भी न करना पड़े। अगर निकोलस कहीं बाहर चला जाता तो बूढ़ा उसके जूतों के दुर्भाग्य का चित्र खींचने लगता था। पर स्टीपेन यह सब अपने पुत्र को फजूल चिढ़ाने के इरादे से या उसे चोट पहुँचाने की

नीयत से न कहता था। उसका उद्देश्य केवल यही था कि निकोलस कुछ सुधरे। जब से नायब दारोगा ने बूढ़े से उसके पुत्र के व्यवहार का हाल कहा था, स्टीपेन के मन में दिनों दिन यही इच्छा बढ़ने लगी कि निकोलस की मनोवृत्ति में कुछ परिवर्त्तन हो। यही कारण था कि छोटी-छोटी बातों पर भी वह अपने पुत्र को कोसने लगता था।

एक दिन सड़क पर अचानक ही बूढ़े की दारोगा से भेंट हो गई। बूढ़ा उसे देखकर बहुत घबड़ा गया। वह अब गाँव के किसी भी परिचित व्यक्ति से मिलते डरने लगा था। उसे उन लोगों को मुँह दिखाते शरम आती थी। ऐसा मालूम पड़ता, मानो उसने कोई ऐसा बेहूदा काम किया है जो उस-जैसे खानदानी और इज्जतदार आदमी की शान के खिलाफ था।

आप तो कभी आते ही नहीं? दारोगा ने पूछा।

आने का इरादा तो बहुत दिनों से है, पर मौका ही नहीं मिलता। स्टीपेन ने आँखें नीची करके कहा और मेरिया की तबीयत ठीक न होने का बहाना बता दिया।

और निकोलस तो पूरा घाघ निकला, उसने अपनी सूरत भी न दिखायी। दारोगा बोला।

स्टीपेन कुछ-कुछ शरमा गया और मन में अपने पुत्र को उसकी उद्दण्डता के लिए कोसने लगा। तब एक गहरी निःश्वास

खींचकर बोला, वह आते हिचकिचाता है। उसने कुछ मूर्खता-पूर्ण कार्य कर डाला है और अब मुँह छिपाता फिरता है। उसे अपनी सूरत दिखाते लज्जा आती है।

उँह, उसमें लजाने की क्या बात है! दारोगा बोला, बीती बातों की गलतियों के लिए उसे अब कोई दोष न देगा।

फिर भी वह बहुत हिचकिचाता है। स्टीपेन कहने लगा, उसे भय है कि आप उससे बहुत नाराज हैं; क्योंकि यद्यपि आप उसके धर्म-पिता हैं, फिर भी हैं तो आखिरकार पुलिस के दारोगा ही।

दारोगा खिलखिलाकर हँसने लगा।

अजी नहीं! वह कहने लगा, यों तो दुनिया में कोई भी निर्दोष नहीं है। उसे आप अवश्य मेरे घर भेजें। यद्यपि मैं उसे कुछ भला-बुरा कहूँगा, पर उसके धर्म-पिता की ही हैसियत से कहूँगा, दारोगा की तरह नहीं। सचमुच ही यह नौजवान लोग कैसे उपद्रवी हैं। उनकी मूछों की रेखा भी प्रकट नहीं होती, उसके पहले ही वे लोग स्वराज्य माँगने लगते हैं।

दारोगा फिर हँस पड़ा। हँसते समय उसका हृष्ट-पुष्ट शरीर हिलने लगता था। स्टीपेन उसकी सद्भावना और कृपादृष्टि से दब रहा था। बूढ़े की आँखों में आनन्दाश्रु छलकने लगे और उसका हाथ खुशी के मारे थरथराने लगा।

हम दकियानूस बूढ़े भी तो उनकी तरह एक दिन जवान थे। स्टीपेन बोला, सच पूछा जाए तो निकोलस बहुत सुशील और भला लड़का है। पर, अचानक ही उसकी मनोवृत्ति न जाने कैसे पलट गई।

दारोगा को सहानुभूति के साथ सिर हिलाते हुए देखकर स्टीपेन का साहस और भी बढ़ा और उसने पूछा, पर क्या अब उसकी गलती सुधारने का कोई रास्ता नहीं है? यदि वह पुनः अपने स्कूल में जा सकता......

कुछ दिन ठहरिये, सब कुछ ठीक हो जायगा। दारोगा ने विश्वास दिलाया और बूढ़े से हाथ मिलाकर अपने रास्ते पर कदम बढ़ाया। स्टीपेन ने जाते हुए दारोगा की ओर मुड़कर देखा और अपने मन में कहा, गजब का आदमी है।

उस दिन स्टीपेन जब घर लौटा, उसका दिल बाँसों उछल रहा था। रास्ते में भी वह अपनी छतरी घुमाता हुआ किसी पुराने गीत की पंक्तियाँ दोहराता जाता था।

उस दिन भोजन के समय स्टीपेन बहुत खुश रहा। निकोलस की ओर स्नेह-भरी दृष्टि से देखकर वह बोला, आइये साम्यवादी जी! मेरिया से भी उसने मजाक किया। भोजन करने के बाद वह कमरे में टहलने लगा और बार-बार किसी गीत की पंक्तियाँ गाने लगा।

आज ऐसी क्या खुशी हुई है कि एक दम गाने ही लगे हो ? मेरिया ने विस्मित होकर पूछा। पर स्टीपेन ने कुछ भी उत्तर नहीं दिया; वरन विचित्र हाव-भाव के साथ अपना काँपता हुआ हाथ घुमाता हुआ, वह और भी मस्त होकर गाने लगा।

मेरिया भी अपने पति को प्रसन्न देखकर चहक उठी। आज उसने चाय की मेज के लिए एक नया रूमाल निकाला और नाश्ता तैयार करते समय विशेष सावधानी दिखलाई। उसका चेहरा अत्यन्त प्रसन्न दृष्टिगत होता था।

चाय पीते समय स्टीपेन ने अपने पुत्र को मजाक की आवाज से पुकारा। आइये महाशय साम्यवादी जी ! आपको एक खुशखबरी सुनानी है। आइये तशरीफ रखिये।

निकोलस इस आवाज को सुनकर काँप उठा और उसका चेहरा फीका पड़ गया। आज अपने पिता को एकाएक खुश देखकर उसे भय होने लगा। जब वह, स्टीपेन के समीप पड़ी हुई बेंच पर बैठा उसका हृदय किसी भावी विपत्ति की आशंका से भयभीत होकर धड़क रहा था।

मैंने तुम्हें सैकड़ों बार अपने धर्म-पिता के घर जाने के लिए कहा। पर, तुम तो ध्यान ही नहीं देते।

फिर वही धर्म-पिता ! निकोलस ने अपने मन में कहा।

तब स्टीपेन ने विस्तार पूर्वक दारोगा के साथ अपनी भेंट

और बातचीत का वर्णन करना शुरू किया। बीच-बीच में उसने अपनी ओर से भी कुछ बातें जोड़ दीं, ताकि निकोलस को पूर्ण विश्वास हो जाए कि दारोगा ने स्पष्ट रूप से निकोलस को फिर कालेज में भरती कराने का वचन दिया है। सिर्फ शर्त्त यही है कि निकोलस अपने मष्तिष्क से साम्यवादी विचारों की गंदगी निकाल फेंके और पुनः अपनी राह पर आ जाए।

भई! दारोगा गजब का आदमी है! स्टीपेन ने बातचीत के सिलसिले में कहा और तब अपने पुत्र को हिदायत देने लगा, मैं कहता हूँ कि तुम अगले इतवार के दिन गिरजाघर जाने के बाद दारोगा के घर जाओ। हम लोगों का कहना मानकर जरा अक्ल से काम लो। जो अब उचित और लाभप्रद हो वही करो और बस सब मामला सुलझ जावेगा।

निकोलस चुपचाप मेज की चादर की ओर देखता रहा। उधर स्टीपेन कह रहा था, अब इन बेवकूफियों को छोड़ो। प्रकृति भी तुम्हारे मूर्खता पूर्ण विचारों से सहमत नहीं है। वह तुम्हारी समानता की योजनाओं को कदापि सफल नहीं होने देगी......

मैं समझता हूँ कि यदि तुम अपना सिर झुका लोगे तो वह टूट न पड़ेगा। बूढ़े ने अपनी बात समाप्त करते हुए कहा।

पर कभी-कभी वह टूट कर गिर भी पड़ता है। निकोलस ने दबी जबान से कहा।

स्टीपेन का चेहरा क्रोध के मारे तमतमा उठा। उसने टेबल पर एक चम्मच पटकते हुए जोर से चिल्लाकर कहा, तब तुम से बढ़कर बेवकूफ दुनियाँ में कोई भी न होगा। समझे ?

जी हाँ ! समझ गया।

मैं कहता हूँ कि तुम्हें जाना होगा। मैं उन्हें वचन दे चूका हूँ।

नहीं, मैं कदापि नहीं जाऊँगा। निकोलस धीमी आवाज से बोला और उठ खड़ा हुआ।

क्या ? स्टीपेन आग-बबूला होकर चिल्ला उठा।

बेचारी मेरिया को कुछ सूझ नहीं पड़ता था कि उसे इस भयंकर दृश्य को रोकने के लिए क्या करना चाहिये। वह स्टीपेन की ओर एक अनुरोध भरी दृष्टि से ताक रही थी और उसकी बाँह पकड़कर बार-बार कह रही थी, अरे ! भगवान के नाम पर ऐसा न कहो।

निकोलस ने टोपी पहन ली। वह फाटक की ओर बढ़ा। बूढ़े माता-पिता ताकते ही रह गये और वह बगीचे के बाहर निकल गया। जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाता हुआ वह नदी के तीर पर जा पहुँचा। उसके ओठ फड़क रहे थे। आँखों में आँसू उमड़ आये थे।

वह नदी के एक ऊँचे करारे पर बैठ गया और एकटक दृष्टि से सामने फैले हुए मैदानों की ओर निश्चल होकर देखने लगा।

अस्ताचलावलंबी सूर्य शनैः-शनैः अँधकार से मलीन होती हुई प्रकृति की ओर एक उदासीन दृष्टि से देख रहा था। क्षितिज पर धीरे-धीरे एक धुँधलापन छा रहा था। ऐसा प्रतीत होता था, मानों कृष्ण-वदनी रजनी चुपके-चुपके अपना काला अंचल फैला रही हो। देखते-ही-देखते उस ग्रीष्म-कालीन संध्या का अवसान हो गया। नदी के गंभीर नीले जल में तीरवर्त्ती वृक्षों की प्रतिच्छाया काली-काली दृष्टिगोचर होने लगी। आकाश घने अंधकार से आच्छादित हो गया और बादल ऐसे दिखने लगे मानो काले वर्ण के विशालकाय राक्षस हों।

निकोलस किनारे के वृक्षों के नीचे बैठा था। आसपास सड़ी हुई घास और गीली मिट्टी की गँध फैल रही थी। वृक्षों के पत्ते वायु का झोंका पाकर खड़खड़ा रहे थे और नदी के कलकल शब्द के साथ अपना स्वर मिलाकर, एक रहस्यपूर्ण वार्तालाप करने में संलग्न थे। प्रकति विचार-मग्न प्रतीत होती थी। केवल किसी जल-कुक्कट की कर्णकटु चीत्कार से, अथवा किसी चौंकी हुई बत्तक के पंखों की फड़फड़ाहट से ही कभी-कभी वातावरण की शांति भंग हो जाती थी।

बहुत देर तक निकोलस उस संध्याकालीन दृश्य को देखता रहा। जब अँधकार प्रगाढ़ हो गया तब उसकी कल्पना, नदी-तट के उस अँधेरे प्रदेश से भी परे विचरने लगी। उसने देखा,

मानो उन चरागाहों से दूर, बहुत दूर, नीपर नदी के तटपर एक शाँत भवन है। उसके चारों ओर सुन्दर वाटिका है। पीछे सुरम्य स्नानागार है। ऊपर विशाल अटारियाँ हैं। तब निकोलस सोचने लगा मानो सुरम्य वाटिका से परिवेष्टित उस शांत कुटीर में किसी मुग्धा बालिका की मधुर वाणी गूँज रही है। मानो संध्या की लालिमा से अनुरञ्जित उस एकान्त निकुञ्ज में किसी चपला बाला का रेशमी परिधान, मंदानिल का मृदुल स्पर्श पाकर लहरा रहा है।

घंटों तक निकोलस, गेलिआ का स्वप्न देखता हुआ उसी स्थान पर बैठा रहा। वहाँ उसकी भावना-लहरी में बाधा पहुँचाने वाला कोई न था। चारों ओर गंभीर शांति फैली हुई थी। केवल निद्राग्रस्त सरिता का मधुर श्वासोच्छ्वास ही कर्णगोचर हो रहा था; किंतु वह भी मानो अपने कलकलमय संगीत-द्वारा, क्षितिज के धुँधले आवरण में छिपे हुए उसी एकान्त प्रदेश की मंजुल कहानी कह रही थी, जहाँ कमलनयनी गेलिआ का निवास स्थान था।

निकोलस उसी अदृष्ट प्रदेश का ध्यान करता हुआ, एक प्रणय-गीत गाने लगा। उसकी तान में कितनी तड़पनभरी वेदना थी! कितनी दर्द भरी पुकार!! रात्रि की उस निस्तब्ध घड़ी में उसका प्रकम्पित आलाप नदी के समीपवर्त्ती प्रान्त में गूँजता

हुआ, न जाने किस अज्ञात लोक की ओर अग्रसर हो रहा था। शायद गेलिआ भी इसी तरह अपने प्रेमी का स्वप्न देखती हुई नीपर के किसी रमणीय तट पर बैठी हो। ऐसा प्रतीत होता था, मानो पवन निकोलस का प्रेम-संदेश पहुँचाने के लिए सनसन करता हुआ उसी प्रदेश की ओर बढ़ रहा था जहाँ सुंदरी गेलिआ बैठी होगी।

चन्द्रमा आकाश में ऊँचा चढ़ आया था। चाँदनी के प्रकाश में नदी की मृदुल लहरें झिलमिल-झिलमिल कर रही थीं। खेतों में किसानों की जलायी हुई अग्नि दृष्टिगोचर हो रही थी। सहसा निकोलस को किसी का स्वर सुनाई पड़ा—ओहो! इस एकान्त में आप ही गा रहे हैं?

निकोलस चौंक पड़ा और पीछे मुड़कर देखने लगा। वह ऐसा घबड़ा गया, मानो किसी ने उसे कोई अनुचित कार्य करते हुए पकड़ लिया हो!

कुछ-ही क्षण बाद वृक्षों की ओट से एक व्यक्ति आकर उसके सामने खड़ा हो गया और बोला, क्या आपने मुझे नहीं पहचाना? मैं आपके पिता का मित्र मुनीम हूँ।

अहा! आप हैं।

सचमुच आज की रात बड़ी सुंदर है। मुनीम कहने लगा, हाँ, हाँ, गाइए। मैं भी गाने का बड़ा प्रेमी हूँ। पहले मैं ही चर्च की भजनीक-मंडली का मुखिया था।

मुनीम खाँसता हुआ निकोलस के समीप बैठ गया।

कहिये ! अपने धर्म-पिता दारोगा साहब से तो आप मिल आये न ?

निकोलस ने कुछ भी उत्तर न दिया। वह उछलकर उठ खड़ा हुआ और बिना कुछ कहे-सुने एक ओर चल दिया। शैतान यहाँ भी पिंड नहीं छोड़ता। उसने अपने मन में कहा और शीघ्र ही वह झाड़ियों की ओट में अदृश्य हो गया।

मुनीम भौचक्का-सा देखता ही रह गया। बहुत देर तक वह उन्हीं झाड़ियों की ओर ताकता रहा, जिनकी ओट में उद्धत निकोलस जा छिपा था।

८

निकोलस बहुत देर तक नदी के किनारे घूमता रहा और जब अँधकार घना होने लगा, तब वह गाँव के समीपवर्ती मैदानों में आकर टहलने लगा। चाँदनी छिटक रही थी। चारों ओर निस्तब्धता का साम्राज्य फैला हुआ था। ऐसा प्रतीत होता था मानो चन्द्रमा भी उस अद्भुत शांति को देखकर आश्चर्यान्वित हो रहा हो। केवल सड़क के समीपवर्ती दलदल में मेढ़क टर्रा रहे थे और पास ही कोई व्यक्ति काँपती हुई आवाज में एक रंजीदा गीत गा रहा था। किंतु इससे वातावरण की गंभीर नीरवता भंग नहीं होती थी।

बहुत रात बीत जाने पर भी निकोलस वहीं टहलता रहा।

गाँव में कहीं-कहीं दीपक टिमटिमा रहे थे। कभी-कभी किसी दूर के मुहल्ले में कुत्ते भोंक उठते थे। बीच-बीच में घंटाघर की घड़ी भी अपनी टन्-टन् की मधुर ध्वनि से सारे वायु-मण्डल को कँपाने लगती थी। उस समय ऐसा प्रतीत होता, मानो आकाश में बिखरी हुई रजत-किरणों के तार एक साथ ही झंकृत हो उठे हों।

ज्यों-ज्यों रात बीतती जाती, चाँदनी अधिक निर्मल होती जाती थी। चंद्रमा आकाश में ऊँचा चढ़ गया था। निकोलस अब भी वहाँ से नहीं हटा। वह खेतों और झाड़ियों के आस-पास घूमता रहा। ऐसा लगता था मानो सड़क पर झुकी हुई डालियाँ भी यह जानने के लिये एक रहस्य पूर्ण दृष्टि से ताक रही हों, कि अर्द्धरात्रि को उस सुनसान घड़ी में वह व्यक्ति अकेला क्यों भटक रहा है ?

एकाएक उसने सीटी की तीखी आवाज सुनी और किसी ने कर्कश स्वर में पूछा, कौन ?

निकोलस पहचान गया। वह गाँव का चौकीदार था। समीप आने पर बूढ़ा चौकीदार भी निकोलस को पहचान गया और मुसकराता हुआ बोला, ओह ! आप हैं ? पर, इस समय यहाँ क्यों ? क्या नींद नहीं आती ?

सही कहते हो। निकोलस ने उत्तर दिया।

सचमुच ही आज की रात मनोरम है और आप-जैसे नव-

युवक को ऐसी सुन्दर रात्रि में अकेले रहने पर नींद न आना भी स्वाभाविक ही है।

बूढ़ा खिलखिलाकर हँस दिया और लँगड़ाता हुआ अपने रास्ते पर आगे बढ़ गया। मैदान चंद्र-ज्योत्स्ना के आलोक में पूर्व-वत् ही जगमगा रहा था। उसी तरह मेढ़कों की टर्र-टर्र और उस मनचले युवक का विषाद-पूर्ण संगीत सुनायी पड़ता था। इसी समय घंटाघर की टन्-टन् आवाज गूँज उठी। निकोलस उठ खड़ा हुआ और घर की ओर चल दिया।

रास्ते में वह एकाएक किसी मकान के सामने रुक गया। मकान का एक कमरा प्रकाश से जगमगा रहा था। एक व्यक्ति मेज के सामने बैठकर भोजन कर रहा था और सामने एक नवयुवती खड़ी थी। वह अपने हाव-भाव से उस व्यक्ति की पत्नी दृष्टिगत होती थी। उसका पति बड़े मजे के साथ भोजन करता जाता था और उससे मजाक करता हुआ वार्तालाप कर रहा था...

निकोलस उस दृश्य को देखकर मुसकरा दिया। आह! यह जोड़ी कितनी निश्चिंत मालूम पड़ती है! वह चलते-चलते सोचने लगा, ऐसा लगता था कि इन लोगों को न किसी बात की चिन्ता है, न किसी तरह का असंतोष ही है!

घर समीप आ गया था। पर, निकोलस ज्यों-ज्यों अपने घर की ओर बढ़ने लगा, उसके पैर न जाने क्यों रुकने लगे। आज

वह हरी-हरी लताओं से आच्छादित मकान, उसे न जाने क्यों सुनसान और डरावना नजर आ रहा था। उसका मन आगे बढ़ने से हिचकिचा रहा था। वह घर—जहाँ निकोलस ने अत्यंत लाड़-प्यार के साथ अपना बचपन बिताया था—आज उसे ऐसा भयंकर दृष्टिगत हुआ मानों किसी राक्षस की तरह मुँह फाड़े खड़ा हो।

डरते-डरते निकोलस ने फाटक की सिटकिनी पर हाथ रखा। पर, ज्योंही उसने दरवाजा खोला उसे समीप ही अपने पिता के खाँसने की आवाज सुनायी दी। सचमुच ही स्टीपेन फाटक के निकट एक बेंच पर चुपचाप बैठा था। पर, निकोलस उसे देख न सका; क्योंकि बेंच पर किसी झाड़ी की छाया पड़ रही थी।

कौन, निकोलस ? बूढ़े ने एक भर्राई हुई आवाज में पूछा।

निकोलस हक्का-बक्का हो गया। उसे अपने पिता की उपस्थिति का भान भी न था। घबड़ाकर वह बोल उठा, अच्छा ! आप अभी तक बाहर ही बैठे हैं !

खैर, सो तो ठीक है। स्पीपेन ने उत्तेजित होकर कहा, किंतु आप इतनी रात बीते कहाँ भटकते रहते हैं ? अच्छा जरा ठहरो, एक बात कहनी है।

कहिये।

सिर्फ कहिये कहने से काम नहीं चलेगा, बूढ़ा बोला, सुनो !

आज मैं दारोगा के पास गया था। सचमुच ही वह साधारण आदमी नहीं है। यद्यपि तुम उसकी अवहेलना करते रहते हो, फिर भी वह तुम्हें अपने पुत्र की तरह मानता है। आज उसने कहा है कि यदि तुम एक दरख्वास्त लिखकर प्रार्थना करो कि जो कुछ भी तुमने किया है, वह दूसरे के बहकाने से किया और अब भविष्य में कभी ऐसे कृत्य न करोगे, तो सब मामला सुलझ जावेगा।

निकोलस ने कुछ भी उत्तर न दिया। वह चुपचाप सुनता रहा।

और मैं भी अपनी ओर से एक दरख्वास्त लिखूँगा, बूढ़ा कहता रहा, मैं अर्ज करूँगा कि मुझे ईमानदारी के साथ सरकारी नौकरी करते हुए आज पैंतीस साल हो गये हैं। अब मैं बूढ़ा हो गया हूँ और मेरे हाथ थरथराते हैं.........

निकोलस का गला घुट रहा था। वह अपने पिता की बातें सुनकर ऊब उठा था। पर, स्टीपेन कहता ही जाता था—और तब दारोगा भी उसकी ओर से शिफारिश कर देगा। सब बात ठीक हो जावेगी और तुम फिर से अपने अध्ययन में जुट सकोगे।

निकोलस फाटक के समीप इस तरह खड़ा था मानो किसी भारी दंड की आज्ञा सुन रहा हो। उसकी आँखें जमीन की ओर झुकी हुई थीं। हाथ लटक रहे थे और मुँह से शायद ही कोई शब्द निकलता था। चारों ओर सन्नाटा छा रहा था। ऐसा लगता था मानो रात्रि साँस रोककर, निकोलस के हृदय

का कोलाहल सुनने का प्रयत्न कर रही हो ! आकाश में असंख्य तारे चमचमा रहे थे ।

इसी समय एक मच्छड़ उसके कान के समीप आकर गुन-गुनाने लगा । उसकी मर्मर ध्वनि निकोलस के मस्तिष्क में गूँज उठी । पास ही एक कुत्ता जोर से भोंकने लगा । निकोलस के हृदय में एक भयंकर तूफान मच रहा था । उसे मच्छर की वह मर्मर आवाज किसी के अनवरत आर्त्तनाद-जैसी विषादपूर्ण प्रतीत हुई ।

इसलिए कल तुम्हें दारोगा के पास जाकर उन्हें धन्यवाद देना चाहिये—स्टीपेन पुनः कहने लगा ।

नहीं, मैं न तो कहीं जाऊँगा, न कुछ लिखूँगा ही ! निकोलस ने धीमी आवाज में उत्तर दिया और अपने कमरे की ओर कदम बढ़ाया ।

क्यों ? स्टोपेन ने चिल्लाकर पूछा ।

नहीं, मुझसे यह काम नहीं हो सकता !

पर, पेट में खाना तो बड़ी आसानी से भर सकते हो ! उसमें तो तुम्हें कठिनाई नहीं होती ! बूढ़े ने तीक्ष्ण व्यंग के साथ कहा ।

मैं कहता हूँ, मुझे अकेला छोड़ दो ! मुझे न सताओ !! निकोलस पागल की तरह चिल्ला उठा और दौड़ता हुआ उस कुटिया में घुस गया, जो बगीचे के पिछले हिस्से में बनी थी—

जिसे वे लोग अपने नहाने की कोठरी कहा करते थे । कुछ दिनों से निकोलस ने इसी कोठरी में अपना डेरा जमा रखा था ।

स्टीपेन क्रोध के मारे लाल हो गया और जोर से चिल्ला उठा, बदमाश ! सारा वातावरण काँप उठा । चारों ओर उसी शब्द की प्रतिध्वनि गूँज उठी । ऐसा प्रतीत हुआ मानो वह निस्तब्ध रात्रि ही चौंककर चिल्ला उठी हो—बदमाश !!

कुटिया में घुसकर निकोलस ने एक मोमबत्ती जलाई । कमरे की फर्श गीली थी और छत काली ! एक कोने में नहाने का टब उलटा पड़ा था । उस पर कुछ किताबें रखी थीं । दूसरी ओर एक चौड़ी बेंच पड़ी थी ; जिसके समीप एक कुर्सी थी । दीवार पर असंख्य छायाएँ नृत्य कर रही थीं । दीपक हवा का झोंका पाकर हिल रहा था । निकोलस ने कुटिया की छोटी-सी खिड़की खोल दी और तब वह कमरे में इस तरह टहलने लगा, जैसे पिंजड़ों में कैद किये हुए जानवर टहला करते हैं । किंतु उसे चैन न पड़ा । अचानक-ही उसे अपने अंग-अंग में एक भयंकर थकान मालूम पड़ने लगी । अतएव दीपक बुझाकर वह बेंच पर लेट गया ।

खिड़की से चाँदनी छन-छनकर आ रही थी । दीवार के पास की झाड़ी के पत्ते कभी-कभी खड़क उठते थे । समीप ही एक झींगुर झंकार रहा था । निकोलस बहुत देर तक माथे पर हाथ रखे लेटा रहा । उसके मस्तिष्क में असंख्य विद्रोह-विचारों का

तुमुल-संघर्ष मच रहा था। सहसा उसे सड़क पर जाती हुई किसी गाड़ी की घंटियों की मधुर-ध्वनि सुनायी दी। शनैः-शनैः वह आवाज मंद पड़ती गई और अंत में रात्रि की नीरवता में विलीन हो गई। कोई भाग्यशाली व्यक्ति कहीं चला जा रहा है निकोलस उसकी ध्वनि को सुनकर सोचने लगा, अब मैं भी नहीं ठहर सकता। मुझे भी कूच कर देना चाहिये। शीघ्र ही! बहुत शीघ्र!! आह! यह वेदना अब असह्य है!! ओह! यह थकान कितनी भयप्रद है! कितनी बोझल!!......

एकाएक बगीचे में एक मुर्गा चिल्ला उठा और जोर से पंख फड़-फड़ाने लगा। समीप ही किसी के पैरों की आहट भी सुनायी पड़ी। ऐसा लगा मानो खिड़की के पीछे कोई धीरे-धीरे चल रहा है। निकोलस चौंक पड़ा और उचक कर उसने अपनी बन्दूक उठा ली।

कौन है! भयभीत होकर उसने पूछा।

मैं हूँ बेटा! किसी स्त्री की रुँधी हुई आवाज सुनायी दी और चाँदनी के उज्ज्वल प्रकाश में निकोलस को खिड़की के बाहर अपनी माता का मस्तक दिखायी पड़ा।

अरे! तुम हो अम्मा? लड़के ने विस्मित होकर पूछा।

बेटा! आज तू सोता क्यों नहीं? बुढ़िया ने अत्यंत कातर स्वर से कहा, तू उदास क्यों है?

वह चुप हो गई और खिड़की पर झुककर चुपचाप सिसकने

लगी। निकोलस उसके समीप गया और कुछ कहने का प्रयत्न करने लगा, पर अचानक ही उसका गला रुँध गया। आँखों में आँसू उमड़ आये। बड़ी कठिनाई से वह कह सका, माँ! परमेश्वर के नाम पर, अपने को कमजोर न करो......

आह! कोलिआ! मेरा दिल तुझे रंजीदा देखकर इतना कसक रहा है कि मैं किसी तरह भी अपने आँसू नहीं रोक सकती।

निकोलस वहाँ खड़ा नहीं रह सका। वह लपककर कोठरी के एक अँधेरे कोने में जा छिपा और हाथों में मुँह छिपाकर सिसक-सिसक कर रोने लगा। उसके गालों पर गरम-गरम आँसुओं की धाराएँ बह रही थीं। हृदय भीतर-ही-भीतर किसी असहनीय पीड़ा से कसक रहा था।

मेरिया अँधेरे में रास्ता टटोलती हुई आयी। उसने अपने बेटे के कंधे पर सिर टिका दिया और फूट-फूटकर रोना शुरू किया। घंटो तक दोनों, उसी तरह एक दूसरे से लिपटे हुए, उस अँधेरे कोने में चुपचाप आँसू बहाते रहे। तब वहाँ से उठे और बेंच पर आकर बैठ गये। माता ने अपने पुत्र का हाथ पकड़ लिया। उसकी सूखी उँगलियाँ अधिकाधिक शक्ति के साथ निकोलस के हाथ को दबाने का प्रयत्न कर रही थीं।

नहीं, नहीं; मैं अब तुम्हारे पास नहीं ठहर सकता! मुझे अब कहीं चला जाना चाहिये! निकोलस सिसकता हुआ बोला।

क्यों, क्यों ! क्या तुम्हारे बाबा ने कुछ बुरा-भला कहकर दिल तो नहीं दुखाया ? बुढ़िया अपने पुत्र की ओर झुककर उसके सिर पर हाथ फेरने लगी। निकोलस उसकी गोद में सिर रखकर लेट गया। उस समय उसे ऐसा प्रतीत होने लगा, मानो वह पुनः एक छोटा-सा बालक बन गया है और उसके मन में अपनी माँ के प्रति उतना ही स्नेह उमड़ आया जितना बचपन में उमड़ा करता था ! निकोलस को उस समय अपनी माँ इतनी अधिक प्यारी मालूम हुई कि उसके लिए वह अपना जीवन भी समर्पित करते नहीं हिचकिचाता, उसने अपने सूखे ओठ बुढ़िया के हाथ पर दबा दिये। मेरिया की आँखों में आँसू छलक रहे थे।

मैं क्या करूँ ? वह मंदस्वर में गुनगुना रहा था, मुझे अब कोई भी रास्ता नहीं सूझ पड़ता। यह जीवन अब मेरे लिए असह्य हो उठा है ! मुझे शीघ्र ही यहाँ से भाग जाना चाहिये ! दूर ! बहुत दूर !!

ऐसी रंजीदा बात क्यों कहते हो बेटा ! जरा अपने बूढ़े बाप का भी खयाल करो ! क्या तुम्हें उनपर तनिक भी दया नहीं आती ? देखो ! वे अभी भी रो रहे हैं !! निकोलस कम-से-कम उनके बुढ़ापे के लिहाज से ही उनकी बात मान लो ! हठ छोड़ो !!

आह ! तुम......

तब बुढ़िया अत्यंत कातर वाणी में जीवन और मृत्यु का

रहस्य समझाने लगी। उसने बताया, माता-पिता का हृदय क्या वस्तु होती है; बुढ़पा किस भयंकर स्वरूप को लेकर प्रकट होता है; जीवन की पहेली कितनी जटिल हुआ करती है!......

निकोलस चुपचाप उसकी विचित्र बातें सुनता रहा। यद्यपि बुढ़िया के शब्दों का असली रहस्य तो नहीं समझ सका, तथापि उस स्नेह-भरे वार्तालाप से उसके हृदय को एक प्रकार की सांत्वना मिल रही थी।

अतएव मेरा अनुरोध मानकर, तुम जो कुछ वे कहें, लिख दो! बुढ़िया ने कहा।

निकोलस को रात्रि की बात याद आगयी। उसने अपना सिर हिलाते हुए कहा; नहीं, मैं कदापि नहीं लिख सकता! यदि तुम मुझे प्यार करती हो तो मुझसे इस बात का अनुरोध मत करो और तब एक ठंडी साँस खींचता हुआ वह गुनगुनाया, अवश्य ही मुझे चला जाना चाहिये!

क्यों बार-बार चले जाना, चले जाना कह रहे हो बेटा! तुम कहाँ जा सकते हो? नहीं, तुम कहीं भी नहीं जा सकते! जानते नहीं हो तुम्हारे पिता पर कितना भारी उत्तरदायित्व है?

निकोलस कुछ नहीं बोला। बहुत देर तक दोनों चुप्पी साधे बैठे रहे। दोनों के मन में तरह-तरह के विचार उमड़ रहे थे। प्रकृति निस्तब्ध थी। ऐसा प्रतीत होता था मानो अंधकार में बैठे

हुए इन लोगों के हृदय का हाल जानने के लिए रात्रि भी खिड़की में से चुपके-चुपके झाँक रही हो !

❀ ❀ ❀ ❀

समीप ही मकान के एक छोटे से कमरे में एक दीपक जल रहा था। कमरे की दीवार पर ईसा का पवित्र चित्र लटक रहा था जिसके समक्ष बूढ़ा स्टीपेन घुटनों के बल झुका हुआ अत्यंत कातर शब्दों में प्रार्थना कर रहा था, परम पिता ! दीनबन्धु !! उस उच्शृंखल बालक को राह बता ! रक्षाकर !!

६

ग्रीष्म की दोपहरी थी। आकाश में बादलों का पता भी न था। सूर्य इतनी प्रचंड आग बरसा रहा था कि ऊपर आँखें उठाने की हिम्मत ही न होती थी। अबाबीलें सड़क की धूल में नहा रही थीं और कौवे पंख फैलाये आराम कर रहे थे। सारा गाँव गरमी के कारण परेशान था। सभी अपने-अपने घरों में घुसकर ऊँघ रहे थे। इस समय किसी को भी अपने पड़ोसी की हाल पूछने की इच्छा न होती थी। अतएव पास ही उस बगीचे वाले मकान में इस समय क्या हो रहा था, इस बात को जानने की न तो किसी को उत्सुकता ही थी, न चिन्ता ही !

उपरोक्त मकान के फाटक के सामने इस समय छोटी-सी गाड़ी खड़ी थी। घोड़ा मक्खियों को अपनी पूँछ से उड़ाता हुआ

ऊँघ रहा था और उसका हाँकने वाला चहारदीवारी पर बैठा हुआ जूतों की मट्टी खरोंच रहा था। चारों ओर सन्नाटा था। सिर्फ मकान की खुली खिड़की से न जाने किसकी दर्दभरी चीखें बार-बार सुनायी पड़ती थी। ऐसा दिखता था, मानो किसी व्यक्ति को जबरदस्त पीड़ा हो रही है, जिसकी असहनीय वेदना से व्याकुल होकर वह रह-रहकर कराह रहा है।

पर, ऐसा प्रतीत होता था कि वह व्यक्ति अकेला ही नहीं है; क्योंकि ज्योंही उसकी आवाज आती, बरामदे में एक तरह की कानाफूसी होने लगती थी। साथ-ही किसी के पैरों की आहट भी सुनाई पड़ती थी। क्षण भर बाद सब चुप हो जाते थे और एक तरह का सन्नाटा छा जाता। किंतु पुनः वह चीखें सुनाई देतीं और उनके साथ ही फिर वही कानाफूसी होती और कमरों में भगदड़ मचने लगती थी।

कौन आया है? एक व्यक्ति ने गाड़ीवान के समीप आकर अत्यंत धीमी आवाज में पूछा।

डाक्टर! गाड़ीवान ने उत्तर दिया।

आगन्तुक ने इस तरह साँस खींची मानो वह बहुत देर से रुक रही हो। उसने अपनी छतरी बन्द करली और एक तरह की घबड़ाहट के साथ मकान की ओर देखा। यह महाशय, स्टीपेन के वही पुराने मित्र मुर्नाम महोदय थे।

मुनीम सड़क पर खड़ा-खड़ा चहारदीवारी की ओट से हाते में झाँकने लगा। तब एकाएक उसने किसी व्यक्ति को बाहर आने का संकेत किया और स्वतः वह एक ओर खिसककर खड़ा हो गया। उसके चेहरे पर से पसीना टपक रहा था, जिसे वह बार-बार रूमाल से पोंछता जाता था......

हाते का फाटक खुला और एक ग्रामीण स्त्री ने बाहर झाँक कर देखा। उसके चेहरे पर हवाइयाँ उड़ रही थीं। ऐसा दृष्टिगत होता था मानो वह अत्यंत भयभीत हो रही है। मुनीम को देखते ही उसकी आँखें मिचमिचाने लगीं और उनमें से आँसू की बूँदें टपक पड़ीं।

क्यों! क्या मामला है? मुनीम ने घबड़ा कर पूछा।

स्त्री सिसकने लगी ओर कपड़े में मुँह छिपाकर रोते-रोते बोली आह! बेचारे बूढ़े पर तो आसमान ही फट पड़ा। इस बज्र-सम चोट से उसका कलेजा चूर-चूर हो गया। न उसके हाथ-पैर ही हिलते हैं, न जबान ही! केवल दयनीय आँखों से वह चारों ओर ताक रहा है।

बात पूरी होने के पहले ही वह और भी जोश के साथ सिसकने लगी! तब नाक छिनकते हुए बोली, आप भीतर क्यों नहीं आते?

आने से लाभ ही क्या? मुनीम ने मंद स्वर में कहा, अब क्या हो सकता है?

वह ठंडी निःश्वास खींचकर पास की एक बेंच पर बैठ गया। गाड़ीवान, उस भद्रपुरुष के निकट बैठना अनुपयुक्त समझ उठ खड़ा हुआ।

और उसे तो आप देख ही चुके हैं न? स्त्री ने पूछा।

किसको?

निकोलस को......

नहीं! मुनीम ने घबड़ाकर कहा, क्यों! वह कहाँ है?

आह! वह तो उस कुटिया में इतना निश्चिंत होकर सो रहा है कि......बेचारी स्त्री अधिक न कह सकी। उसका गला रुँध गया और चादर में मुँह छिपाकर वह फाटक के पीछे चली गई!

इसी समय सामने के मैदान की ओर से, एक बूढ़ा, मुनीम के समीप आकर कुछ कानाफूसी करने लगा। उसकी आँखों पर नीले रंग का ऐनक था। सिर पर ऊँची दीवार की टोपी।

कुछ देर तक हाते की ओर झाँकने के बाद वह बोला, मैं तो समझता हूँ कि भीतर चलना चाहिये। अगर न गये तो ठीक न दिखेगा।

मुनीम ने सिर हिलाकर उसकी बात स्वीकार की और दोनों उठ खड़े हुए। दोनों की मुख-मुद्रा गंभीर दृष्टिगत होती थी। उन्होंने अपनी छतरियाँ खोल लीं और उसी कुटिया की ओर—जो स्टोपेन का स्नानागार था—कदम बढ़ाया। काली-काली

छतरियों के नीचे वे ऐसे नजर आते थे मानों दो बड़े-बड़े कुकुर-मुत्ते चले जा रहे हों।

उस पुरानी कुटिया के समीप गाँव के स्त्री-बच्चों की एक छोटी-सी भीड़ जमा हो गई थी। वे लोग बार-बार उस कुटिया की खिड़की से आँखें फाड़-फाड़कर झाँक रहे थे। कुटिया के दरवाजे पर ताला लगा हुआ था और एक सशस्त्र संतरी उसके सामने टहलता हुआ पहरा दे रहा था......

औरतें उस खिड़की में झाँकने के लिए एक दूसरे पर टूटी पड़ रही थीं। दूर से देखने पर कुटिया में पड़े हुए किसी आदमी के पैर नजर आ रहे थे। वे नये मोजों से ढके हुए थे। औरतें भयभीत होकर उनकी ओर देख रही थीं और कानाफूसी कर रही थीं, यह उसी के पैर हैं ?

हाँ, हाँ उसके ही।

जरा मुझे भी देखने दो। तुम तो खूब देख चुकीं। पर, अब क्या सरकारी जाँच भी होगी ?

इसमें क्या संदेह है !

हे भगवान !

लोग आते थे और विस्फारित नेत्रों से बार-बार उसी खिड़की से झाँकते थे। पर, उनकी उत्कंठा की वस्तु तो इतनी गंभीर-निद्रा में सुप्त थी कि संसार की निंदा-प्रशंसा का उसे ज्ञान भी नहीं हो सकता था।

किसी श्रान्त मनुष्य की तरह, निकोलस कुटिया की एक बेंचपर, चिर-निद्रा में बेहोश होकर पड़ा था। समीप ही उसकी डायरी पड़ी थी, जिसके खुले पृष्ठ पर एक मुरझाया हुआ फूल रखा हुआ था।

१०

दूसरे दिन निकोलस दफना दिया गया।

प्रातःकाल का समय था। प्रभात-वायु मन्थर गति से बह रही थी। चारों ओर निस्तब्धता छा रही थी। सिर्फ गिरजे की घंटियाँ अपने गम्भीर नाद से समग्र वातावरण को कँपाती हुई सुनने वालों के हृदय में एक वेदना जगा रही थीं।

अरथी श्मशान की ओर बढ़ने लगी। गाँव के सभी लोग साथ-साथ चल रहे थे। आगे स्थानीय चर्च के भजनीक थे, जो अत्यन्त विषादपूर्ण स्वर में धार्मिक गीत गाते जाते थे। जब गीत गाने वाले चुप हो जाते, झाड़ियों की ओट से एकाएक पक्षियों के मधुर संगीत की एक धारा फूट पड़ती थी।

जनाजे के ठीक पीछे एक बुढ़िया लड़खड़ाती हुई चल रही थी। पुलिस का दारोगा उसे अपने कन्धे का सहारा देकर थामे हुए था। दूसरी बाजू से नायब दारोगा भी उसकी बाँह पकड़ कर चल रहा था। बुढ़िया की दशा दर्दनाक थी। उसकी आँखों में आँसू नहीं थे। वह न बोलती थी, न रो सकती थी। केवल

धुँधली आँखों से उस अरथी की ओर देख-देखकर अपना सिर धुनती जाती थी।

शहर के गण्यमान्य लोग दारोगा के साथ-साथ चल रहे थे। सब के दिल में एक वेदना कसक रही थी। उनकी दृष्टि उस बुढ़िया पर ही एकाग्र थी। प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में उस अभागिन माता और उसके मृत पुत्र के लिए शोक और सहानुभूति के भाव उमड़ रहे थे।

मुनीम भजनीक-मण्डली में शरीक था। वह बड़ी गम्भीर मुख-मुद्रा से अन्य लोगों की अगुवाई कर रहा था। ऐसा दिखता था मानो उसके लिए किसी नवयुवक की अकाल मृत्यु इतनी महत्वपूर्ण बात नहीं थी, जितनी उन गीत गाने वालों की शैली का निरीक्षण करना! वह अत्यन्य एकाग्र दिखने का प्रयत्न कर रहा था और कभी-कभी भजनीकों को ठीक तरह से गाने का संकेत भी करने लगता था। पर, वे लोग उसकी ओर ध्यान ही नहीं देते थे।

श्मशान में पहुँचने पर केलिआजिन अर्थी के समीप आकर निकोलस के लिए, अपनी ओर से कुछ सहानुभूति के शब्द कहने लगा। पर वह एक वाक्य भी पूरा नहीं कर पाया। ज्योंही उसने कहना शुरू किया—आप लोग उसके लिए अधिक शोक न करें, युवावस्था में मरना कोई बुरी बात नहीं है...........,

बुढ़िया एकाएक चीख उठी और उन्मत्त की तरह, अपने आप को लोगों के हाथों से छुड़ाने के लिए छटपटाने लगी। दारोगा का दिल भर आया। उसकी आँखों में आँसू आ गये। रंजीदा होकर वह बोला—धैर्य रखो, यह हमारे हाथ की बात नहीं है। सब उस परमपिता की लीला है। तब व्यर्थ रोने-चिल्लाने से क्या लाभ?

सब को एक-न-एक दिन मरनाबदा ही है माँ! नायब दारोगा ने भी सहानुभूति दिखलाते हुए कहा, हम सब किसी दिन यहीं आने वाले हैं।

पर, मेरिया ने किसी की भी न सुनी। धीरे-धीरे उसका सिसकना रुदन में परिणत हो गया और वह फूट-फूटकर रोने लगी। उसके रुदन के कोलाहल में केलिआजिन का भाषण किसी को भी न सुनाई दिया।

लाश दफनायी जाने लगी।

कोलिआ, वह चिल्लाकर रो पड़ी। अरे! तूने यह क्या कर लिया!!

दारोगा ने अपना रूमाल निकाल लिया। कब्र के आसपास खड़े हुए सब लोगों की आँखों में आँसू छलक रहे थे।

मिट्टी भर दी गई। सब लोग चुपचाप खिसक गये। श्मशान में फिर सन्नाटा छा गया। केवल वह अभागिनी बुढ़िया

वृक्ष पर बैठे हुए पक्षियों के साथ अकेली रह गई। पक्षी तो सदा की तरह फुदक-फुदककर गा रहे थे। किन्तु वह दुखिया माता फूलों से ढँकी हुई समाधि के सामने बैठकर अत्यन्त कातर स्वर में सिसक रही थी। वह निर्निमेष दृष्टि से उसी मिट्टी की ढेरी को देख रही थी और एक दर्दभरी आवाज में गुनगुनाती जाती थी, हाय बेटा!......

ब्रह्मचर्य-जीवन

ब्रह्मचर्य ही मानव जीवन का सार है। ब्रह्मचर्य की रक्षा से ही भीष्म ऐसा योद्धा, महावीर ऐसा पराक्रमी और श्री कृष्ण ऐसे मेधावी पुरुषों का भारतभूमि में अविर्भाव हुआ था। वसुन्धरा में अक्षय कीर्ति छोड़ जाने वाले महापुरुषों के जीवन का मूलतत्व सदा अखंड ब्रह्मचर्य ही रहा है। इसी के बल पर हमारे पूर्व पुरुषों ने अनुपम और अमर साहित्य का निर्माण कर संसार को ज्ञानालोक प्रदान किया है। अलौकिक योगसाधन आविर्भूत कर अज्ञेय ब्रह्म की खोज कर अमरत्व प्राप्त किया है। उन्हीं महर्षियों की सन्तान आज ब्रह्मचर्य को भूलकर पतन के मार्ग पर जा रही है। अतएव प्रत्येक मातृभूमि के निवासी का कर्तव्य है कि अपने बन्धुओं तथा अपनी संतान को ब्रह्मचर्य की रक्षा का पाठ पढ़ाने लिए ब्रह्मचर्य-जीवन की एक प्रति दें और स्वयं भी पढ़ें। मूल्य केवल ॥।)